

पैगंबर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की वसीयतें

डॉ. मुह़म्मद बक्र इस्माई़ल

दुसरा भाग

121-150

Rasoulallah.net

LiseOnSunnah Rasoulallah RasoulAllahnet RasusoulAllah_net



जो कोई इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा तो उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए। (यानी अपनी मन्नत पूरी करना चाहिए।)

عَنْ عَائِشَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - عن النَّبِيِّ - اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "قَالَ: "مَنْ نَذَرَ أَنْ يُطِيعَ اللَّهَ فَلْيُطِعْهُ، وَمَنْ نَذَرَ أَنْ يَعْصِيه فَلَا يَعْصِهِ

तर्जुमा: ह़ज़रत आ़एशा-रद़यिल्लाहु अ़न्हा- से उल्लेख है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"जो कोई इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा तो उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए। (यानी अपनी मन्नत पूरी करना चाहिए।) और जो इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की नाफरमानी करेगा तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे। (यानी मन्नत पूरी न करे।)"



जो कोई इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा तो उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए। (यानी अपनी मन्नत पूरी करना चाहिए।)

मन्नत मांगना जायज़ कामों में से है जबकि उससे अल्लाह से नज़दीकी हासलि करना मकसूद हो। और कभी मन्नत मुस्तह़ब यानी पसंदीदा होती है जबकि उससे अल्लाह की दी हुई कसिी नेअ़मत पर शुक्र अदा करना मकसूद हो।

और कभी मकरूह यानी नापसंदीदा भी होती है जबकि उसके साथ कसिी ऐसी चीज़ की शर्त लगा दी जाए जसिकी वह अल्लाह से ख्वाहशि करता हो जैसे कि यूँ कहे कि अगर अल्लाह ने मुझे ठीक कर दयिा तो मैं एक मेंढा या बकरी क़ुर्बान करूंगा या सौ रकात नमाज पढ़ूंगा या हफ्ते में दो दनि रोजे रखूंगा। क्योंकि इसमें एक तरह से अल्लाह के साथ बेअदबी है। (इसलएि कि इसमें इस इखलास नहीं है। बल्कि यह तो एक तरह का बदला है।) लहिाज़ा एक सच्चे मुसलमान को अल्लाह के लएि ऐसी मन्नत नहीं मांगना चाहएि कि जसिके बदले में वह ऐसी चीज़ के प्राप्त करने की ख्वाहशि रखे जो उसके मुकद्दर में नहीं है या ऐसी चीज के दूर करने के ख्वाहशि रखे जसिे अल्लाह ने उसके लएि मुकर्रर कर दयिा है। लेकनि हाँ अगर कसिी ने इस तरह की मन्नत मांग ली तो उसे पूरा करना जरूरी है। इसके खलिाफ अगर कसिी ने गुनाह करने की मन्नत मांग ली तो उसे पूरा नहीं करना चाहएि जैसा की ह़दीस़ शरीफ में बयान हुआ।



जो कोई इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा तो उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए। (यानी अपनी मन्नत पूरी करना चाहिए।)

इस स्पष्टीकरण की रोशनी में अब हम समझ सकते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इस फरमाना "जो कोई इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा तो उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए।" का मतलब है कि मुस्तह़ब (पंसदीदा) कामों का करना या अनविार्य (ज़रूरी) कामों को इस तरह से अदा करना जैसे कि मन्नत मांगने वाले व्यक्ति ने उन्हें अपने ऊपर ज़रूरी किया है। ताकि अल्लाह से नज़दीकी हासलि करे, नफ्स को सबक सखिाए और अपनी ख्वाहशि को लगाम कसे।

मन्नत मांगने वाले को चाहिए कि जिसि चीज के करने का उसने वादा किया है यानी मन्नत मांगी है उसे पूरा करे। उसमें किसी तरह की कोताही, सुस्ती या कंजूसी न करे। क्योंकि अगर मन्नत पूरी करने करने में कोताही करता है तो वह अल्लाह के उन नेक बंदो में से नहीं होगा जनिसे अल्लाह ने अच्छा वादा किया है और जन्हिें खूब देने को कहा है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फरमान: "और जो इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की नाफरमानी करेगा तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे।" में गुनाह की मन्नत पूरी करने से साफ तौर पर मनादी है।



जो कोई इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा तो उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए। (यानी अपनी मन्नत पूरी करना चाहिए।)

क्योंकि गुनाह की मन्नत पूरी करना अल्लाह के अधकिार को पूरा करने के खलिाफ है। लहिाज़ा इस तरह की मन्नत पूरी करने से हरगज़ि अल्लाह की नज़दीकी हासलि न होगी बल्कि गुनाह मलिेगा। बल्कि वास्तव में नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह फरमान सरि से ही गुनाह की मन्नत मांगने की मनादी का पता देता है।

लहिाजा इंसान को कोई ऐसा काम करके अपनी जान को परेशानी में नहीं डालना चाहएि जसिके करने की उसमें ताकत न हो या जसिका करना उसे परेशानी में डाल दे और उससे उसकी रोजी-रोटी में तंगी पैदा हो या वह कसिी बीमारी का कारण हो जो उससे बर्दाश्त न हो सके। क्योंकि मन्नत अल्लाह की नज़दीकी हासलि करने का एक ज़रयिा है और अल्लाह की नज़दीकी न तो गुनाह से हासलि हो सकती है और न ही कोई ऐसा काम करने से जो शरअ़ित की रु से मुस्ताहब यानी पसंदीदा कामों के दायरे से बाहर हो। पीछे बयान की गई ह़दीस़ शरीफ से यह भी लयिा जाता है कि गुनाह की मन्नत मांगना सरि से ही जायज नहीं है और अगर कसिी ने मांग भी ली तो वह होगी ही नहीं। और ना उसका पूरा करना जरूरी है। और ऐसी मन्नत मांगने वाला व्यक्ति हर हाल में गुनाहगार होगा। क्योंकि इसमें गुनाह पर जुर्अत और अल्लाह के साथ बेअदबी है। और अल्लाह बहुत ज्यादा दयालु, नहिायत रहम करने वाला और बहुतों को माफ करने वाला है।



जो कोई इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा तो उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए। (यानी अपनी मन्नत पूरी करना चाहिए।)

इंसान अपने आप को अच्छी तरह समझता है। लहिाज़ा समझदारी इसी में है कि अपने आपको किसी ऐसी चीज का पाबंद न बनाए जसिकी वजह से वह परेशानी में पड़े। बल्कि अपने आप पर आसानी करे और जहाँ तक हो सके सही बात करे और ठीक काम करे।



छोटे छोटे गुनाहों से (भी) बचे रहो।

عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أن رسول الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قال: "إِيَّاكُمْ وَمُحَقَّرَاتِ الذُّنُوبِ، فَإِنَّمَا مَثَلُ مُحَقَّرَاتِ الذُّنُوبِ كَمَثَلِ قَوْمٍ نَزَلُوا بَطْنَ وَادٍ فَجَاءَ ذَا بِعُودٍ وَجَاءَ ذَا بِعُودٍ حَتَّى حَملوا مَا أَنْضَجُوا بِهِ خُبْزَهُمْ وَإِنَّ مُحَقَّرَاتِ الذُّنُوبِ مَتَى يُؤْخَذُ بِهَا صَاحِبُهَا تُهْلِكْهُ".

तर्जुमा: हज़रत सहल बनि सअ़द रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "छोटे छोटे गुनाहों से (भी) बचे रहो।



छोटे छोटे गुनाहों से (भी) बचे रहो।

क्योंकि छोटे गुनाह उस क़ोम की तरह हैं जो किसी वादी में ठहरी, फिर उसका एक आदमी एक लकड़ी ले आया और दुसरा आदमी एक ओर लकड़ी ले आया यहाँ तक कि सभी लोग इतनी लकड़ी ले आए कि सभी ने अपनी रोटियाँ पका लीं। यकीनन जब छोटे गुनाहों की पकड़ होगी तो ये गुनाहगार को बर्बाद कर देंगे।"

सबसे खतरनाक और अ़ज़ाब वाला गुनाह यह है कि इंसान किसी गुनाह को छोटा जानकर और आखरित में उसके अंजाम की परवाह किए बिना उसे करता रहे। बहुत से गुनाह जिन्हें इंसान छोटा समझता है उसके बहुत से नेमतों से मेहरूमी या उसकी बर्बादी का कारण होते हैं। सह़ाबा ए किराम रद़यिल्लाहु अ़न्हुम के दलिों में अल्लाह का इतना डर था कि वे किसी गुनाह में अंतर नहीं करते थे बल्कि वह हर समय तनहाई में हो या लोगों के सामने हों हमेशा अल्लाह से डरते और किसी घड़ी उसके ज़िक्र से गाफलि नहीं होते। और अगर आराम की वजह से किसी घड़ी अल्लाह के ज़िक्र और उसकी याद गाफलि हो जाते तो उस घड़ी पर बहुत ज़्यादा अफसोस करते और अल्लाह की बारगाह में तौबा और इस्तगिफार करते।



छोटे छोटे गुनाहों से (भी) बचे रहो।

ऊ़लमा ए करिम ने गुनाहों को छोटे-बड़ों में जो बांटा है वह इसलएि ताकि उन पर एह़काम आधारति कर सकें इसलएि नहीं कि एक को ह़कीर और कम जानें और दूसरे को बढ़ा। एक सच्चा मुसलमान छोटे से छोटे गुनाह को भी अपने सर पर पहाड़ के बराबर समझता है जबकि गुनाहगार बड़े से बड़े गुनाह को भी एक छोटी सी मक्खी की तरह समझता है जो उसके मुंह पर बैठी और उड़ गई। हालांकि अल्लाह तआ़ला अपने बंदों के तमाम कामों को एक दफ्तर में जमा करता है। अतः कयामत के दनि जब बंदा आएगा तो उसके सामने उसके उस दफ्तर को खोला जाएगा जसिमें उसके तमाम अच्छे बुरे काम लखि होंगे।

तो नेकयिों का उसे अच्छा बदला मलिेगा और बुराइयों का बुरा। उस दनि नेक व्यक्ति कहेगा:"काश मैं कुछ और नेकयिाँ कर लेता।" और गुनाहगार कहेगा: "काश मैं गुनाह न करता।" हालांकि उस समय उसका अफसोस करना उसके कुछ काम नहीं आएगा।

जो गुनाह वुज़ू और नमाज़ वगैरह से झड़ते हैं वे छोटे गुनाह है। बड़े गुनाह तो सच्ची तौबा और उन नेक काम करने से मटिते हैं जो सच्ची तौबा के सही होने का सबूत होते हैं।



छोटे छोटे गुनाहों से (भी) बचे रहो।

छोटी सी चगिारी से ही बड़ी आग लगती है। (इसी तरह छोटे-छोटे गुनाहों से ही बड़े गुनाह बड़े गुनाह हो जाते हैं और इंसान को हलाक कर देते हैं।) क्योंकि बहुत ज़्यादा गुनाह करने से दलि की चमक खत्म हो जाती है और वह व गंदा सख्त और काला हो जाता है। लहिाजा जो व्यक्ति चाहता है कि अल्लाह उसका कि अल्लाह उसका गम दूर कर दे और उसकी परेशानी खत्म कर दे तो वह जहाँ भी हो अल्लाह से डरे और जहाँ तक हो सके गुनाहों से बचे।



नमाज़ लम्बी करो और भाषण छोटा दो।

عَن أَبِي وَائِل شقيق ابن سلمة - قَالَ: خَطَبَنَا عَمَّارٌ فَأَوْجَزَ وَأَبْلَغَ فَلَمَّا نَزَلَ قُلْنَا: يَا أَبَا الْيَقْظَان لَقَدْ أَبْلَغْتَ وَأَوْجَزْتَ - فَلَوْ كُنْتَ تَنَفَّسْتَ!! فَقَالَ إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْه وَسَلَّمَ يَقُولُ: "إِنَّ طُولَ صَلَاة الرَّجُل وَقِصَرَ خُطْبَتِهِ مَئِنَّةٌ مِنْ فِقْهِهِ، فَأَطِيلُوا الصَّلَاةَ وَاقْصُرُوا الْخُطْبَةَ، وَإِنَّ مِنَ الْبَيَانِ سِحْرًا".

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू वाईल शक़ीक़ बनि सलमा से उल्लेख है वह कहते हैं कि ह़ज़रत अ़म्मार ने हमें भाषण दयिा तो बहुत शानदार लेकनि थोड़ा भाषण दयिा। जब वह (मम्बिर पर से नीचे) उतर कर आए तो हमने कहा:



नमाज़ लम्बी करो और भाषण छोटा दो।

:" ए अबू यक़ज़ान! आपने बहुत शानदार लेकनि थोड़ा भाषण दयिा। काश आप अपना भाषण थोड़ा बड़ा कर देते!" तो उन्होंने जवाब दयिा कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुना कि आपने फरमाया: "आदमी का लम्बी नमाज़ पढ़ना और छोटा भाषण देना उसकी अक्लमंदी और समझदारी का सबूत है। इसीलएि नमाज़ लम्बी करो और भाषण छोटा दो। और कुछ बयान तो जादू होते हैं।"

यकीनन इस्लाम आसानी वाला धर्म है। न इसमें सख्ती और दुश्वरी है और न ही कसिी तरह का कोई हर्ज। लहिाज़ा जो इसमें दुश्वारी पैदा करे या अपने ऊपर या लोगों पर कसिी मामले में सख्ती करे तो यकीनन इस्लाम अपनी रवादारी और वसतयित (यानी संतुलन और मध्य मार्ग) द्वारा उस पर गालबि आजाएगा जसिमें न तो कसिी तरह की ज़्यादती है और न कमी। क्योंकि इस्लाम खुद ही आसानी वाला धर्म है जैसा के हदीस पाक से साफतौर से सबति है। अतः वह अपनी आसानी के द्वारा हर उस व्यक्ति पर ग़ालबि आजाएगा जो उसमें ज़्यादती से काम लेगा या अपने आप या दूसरों को ऐसे कामों के करने को कहेगा जनिके करने की वे ताकत नहीं रखते हैं।



नमाज़ लम्बी करो और भाषण छोटा दो।

हमारे सामने यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण वसयित है। लहिाज़ा आजकल के भाषण देने वालों को चाहएि कि इसे सामने रखें और इससे सबक हासलि करें और बेसूद लंबे लंबे भाषणों और तकरीरों से बचें और अपने आपको भी सुकून दे और दूसरों को भी चैन पहुंचाएं। क्योंकि उनके बेसूद लंबे लंबे भाषणों से बीमारों, बूढों और जरूरतमंद लोगों को तकलीफ होती है और कभी-कभी तो यात्रयिों की सवारी ही छूट जाती है जसिकी वजह से उन्हें सख्त परेशानयिों का सामना करना पड़ता है। जुमा का खुतबा (भाषण) नमाज़ से पहले होता है।

लोग वुज़ू करके नमाज़ का इंतजार करते हैं। कुछ लोग पेट के बीमार होते हैं जसिकी वजह से बहुत देर तक इंतजार नहीं कर सकते और मस्जदि में सख्त भीड़ होती है तो न तो वे अपने वुज़ू को रोक सकते हैं और न ही दोबारा वुज़ू करने के लएि जा सकते हैं। तो ऐसी सूरत में वे अब करें भी तो क्या करें?! और भाषण देने वाला अपने भाषण में मगन रहता है। एक टॉपकि से दूसरा टॉपकि। दूसरे से तीसरा। चले ही जाता है। और उन बीमारों और धूप वगैरह में बैठे लोगों का ख्याल नहीं करता है। तो जरा अंदाजा लगाएं कि वह भाषण देने वाला इन मज़लूमों के हक में कतिना बड़ा गुनाह करता है!!



नमाज़ लम्बी करो और भाषण छोटा दो।

इस तरह के भाषण देने वाले लोगों पर ज़ुल्म व अत्याचार करते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत का उल्लंघन करते हैं। और नमाज़ से लोगों को भगाते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि लोग ऐसे भाषण देने वालों से नफरत करने लगते हैं।

उनकी नसीहत नसीहतें भी सुनना पसंद नहीं करते हैं यहाँ तक कि उनकी लम्बी- लम्बी तकरीरों और भाषणों की वजह से जुमा की नमाज़ भी छोड़ देते हैं। भाषण देने वाले को चाहिए कि वह इस वसयित का पालन करे और अपने भाषण के दौरान ऐसी बात करे जो लोगों के मुनासबि हो और जसि टॉपकि या मुद्दे पर बात करना चाहे उसके तत्वों को खूब अच्छी तरह से दमिाग में बठिा ले और उन्हीं के अनुसार भाषण दे। उनसे हरगजि न नकिले ताकि लोगों का दमिाग इधर-उधर न भटके। तथा उसे चाहिए कि वह अपने भाषण में कुरान की आयतों और सहीह़ ह़दीसों का प्रयोग करे ताकि वह अपने मकसद में कामयाब हो सके।

भाषण देना या बयानबाजी एक ऐसी कला है जो भावनाओं को उभारने या पघिलाने, लोगों की हालतों को जानकर उनका इलाज करने और ज़्यादा तवज्जो के साथ सुनने वाला मुनासबि समय देखकर उनके मुनासबि बात करने पर आधारति है।



कोई जज (न्यायाधीश) गुस्से की स्थिति में दो लोगों के बीच फैसला न करे।

عَنْ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: كَتَبَ أَبُو بَكْرَةَ إِلَى ابْنِهِ وكَانَ بِسِجِسْتَانَ بِأَنْ لَا تَقْضِيَ بَيْنَ اثْنَيْنِ وَأَنْتَ غَضْبَانُ؛ فَإِنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "لَا يَقْضِيَنَّ حَكَمٌ بَيْنَ اثْنَيْنِ وَهُوَ غَضْبَانُ

तर्जुमा: हज़रत अबदुर्रहमान बनि अबु बकरह कहते हैं कि अबु बखरह रदियल्लाहु अन्हु ने अपने बेटे (अबदुल्लह) को पत्र लखिा और उस समय वह इस सजस्तिान थे कि गुस्से की स्थतिि में कभी दो आदमयिों के बीच फैसला मत करना। क्योंकि मैंने नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि आपने इरशाद फ़रमाया: "कोई जज (न्यायाधीश) गुस्से की स्थतिि में दो लोगों के बीच फैसला न करे।"



कोई जज (न्यायाधीश) गुस्से की स्थिति में दो लोगों के बीच फैसला न करे।

इसकी वजह यह है कि गुस्से की स्थिति में इंसान अपनी बुद्धि और अपने होश व हवास खो बैठता है जिसके कारण उसे नहीं पता चलता है कि वह क्या कर रहा है। इसीलिए उससे सही फैसले की उम्मीद नहीं की जा सकती। लिहाजा ऐसी स्थिति में वह जज बनने के लायक नहीं होता है। अतः उसे चाहिए कि उस समय तक कोई फैसला न ले जब तक कि पूरे तौर पर उसका गुस्सा खत्म न हो जाए और जब तक वह अपने होश व हवास में न आ जाए। इंसान का गुस्सा जब बहुत बढ़ जाता है तो वह अपनी बुद्धि खो बैठता है जिसके कारण वह पागलों जैसी बातें और काम करता है। इसीलिए ऐसी स्थिति में उसके काम और उसकी बातें उसकी तरफ नहीं की जाती हैं बल्कि उसके गुस्से की तरफ की जाती हैं।

लिहाज़ा जज जब गुस्से की हालत में फैसला करेगा तो वह सही फैसला नहीं कर पाएगा। ऐसी स्थिति में उसे चाहिए कि वह अपने फैसले में दोबारा गौर करे जबकि उसे हाकिम या बादशाह ने मुकर्रर किया हो। और अगर उसे खुद लोगों ने ही जज बनाया हो और वह गुस्से की स्थिति में फैसला कर दे तो उसे दोबारा कभी भी जज ना बनाएं। बल्कि किसी ऐसे व्यक्ति को तलाश करें जिसमें जज बनने की सारी विशेषताएं पाई जाती हों।

और यही हुक्म है उसका जो भुंका-प्यासा हो, या जिसका पैशाब या पाखाना



कोई जज (न्यायाधीश) गुस्से की स्थिति में दो लोगों के बीच फैसला न करे।

और यही हुक्म है उसका जो भुंका-प्यासा हो, या जसिका पैशाब या पाखाना रुक गया हो, या हवा नकिलने से रुक गई हो, और जो बहुत गुरबत का मारा हुआ हो और पत्नी और बच्चों के खर्च से परेशान हो।

मेरे प्यारे मुसलमान भाई! बेहतर यही है कि लोगों के बीच फैसला करने के लिए जज उसी समय बना जाए जब कोई दूसरा ना हो और फैसले की सख्त जरूरत हो।



यकीनन दुनिया मीठी और हरी-भरी है।

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنَّ الدُّنْيَا حُلْوَةٌ خَضِرَةٌ، وَإِنَّ اللَّهَ مُسْتَخْلِفُكُمْ فِيهَا، فَيَنْظُرُ كَيْفَ تَعْمَلُونَ، فَاتَّقُواالدُّنْيَا وَاتَّقُوا النِّسَاءَ، فَإِنَّ أَوَّلَ فِتْنَةِ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَانَتْ فِي النِّسَاءِ".

तर्जुमा: हज़रत अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"यकीनन दुनिया मीठी और हरी-भरी है। और बेशक अल्लाह तुम्हें उसमें (तुमसे पहले वालों का) जानशीन (वारसि) बनाएगा। फरि देखेगा कि तुम कैसे काम करते हो।



यकीनन दुनिया मीठी और हरी-भरी है।

लहिाज़ा दुनयिा (में डूब जाने) से बचे रहना। और औरतों (के फतिनों में पड़ने) से दूर रहना। क्योंकि बनी इस्राइल में से सबसे पहला फतिना औरतों (के मामले) में ही था।"

दुनयिा की तारीफ और बुराई समय के एतबार से नहीं बल्कि लोगों के कामों के एतबार से की जाती है। क्योंकि कुछ तो केवल दुनयिा ही के लिए काम करते हैं और आखरित के लिए कुछ नहीं करते। और कुछ आखरित के लिए करते भी हैं तो बहुत थोड़ा सा करते हैं और दुनयिा ही के पाने को अपनी मंजलि मकसूद समझते हैं। जबकि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो सरि्फ और सरि्फ आखरित के लिए ही काम करते हैं और दुनयिा की कुछ परवाह नहीं करते भले ही दुनयिा उनकी मुट्ठी में आ जाए या चली जाए।

वास्तव में दुनयिा की जदिगी ऐश और आराम से भरी हुई है लेकनि यह जल्द खत्म होने वाली है जो हमेशा नहीं रहेगी। तो जो चाहे इस से अपना हस्सिा लेकर इससे फायदा उठाए और जो चाहे कोई कुबूल न होने वाली दलील की बुनयिाद पर या तक़वा और परहेज़गारी का झूठा दावा करके अपने आप को इसके फायदे से महरूम रखे और उससे बलि्कुल अलग-थलग हो जाए।

यकीनन दुनिया मीठी और हरी-भरी है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान: "यकीनन दुनयिा मीठी और हरी-भरी है।" से दो नम्निलखिति चीज़ों का पता चलता है:

पहली चीज़ तो यह दुनयिा में कसिी तरह कसिी हद तक कसिी व्यक्ति के लएि कसिी समय में मठिास है। तो मोमनि को चाहएि कि जतिना अल्लाह ने उसे इस दुनयिा से दयिा है उससे फायदा हासलि करे और आनंद ले और अपने अल्लाह का उस नेमत पर शुक्रयिा अदा करे। क्योंकि शुक्र अदा करने से नेमत में ज़्यादती होती है।

दूसरी चीज़ यह के यह दुनयिा जल्द ही खत्म होने वाली है। क्योंकि हरयिाली जल्द ही खत्म हो जाती है। लहिाजा इंसान को चाहएि कि वह इस से अपना हस्सिा लेले और उसी पर राज़ी रहे। क्योंकि अल्लाह की तकदीर से राज़ी रहना ईमान का सबसे बड़ा दर्जा है इसके बाद कोई दर्जा नहीं। और अल्लाह के फैसले से राज़ी रहने वाले लोग ही सबसे बेहतर लोग हैं। वही हैं जन्हिें अल्लाह ने अपनी रज़ा की दौलत से नवाजा है। तो सारी बढ़ाई अल्लाह ही को है।

इस वसयित में मुखबंध और अंतभाषण दोनों हैं।



यकीनन दुनिया मीठी और हरी-भरी है।

मुख्य बंद में दुनयिा की कीमत और नेक और बुरे लोगों के नजदीक उसकी हैसयित बयान की गई है। तथा उसके जल्द खत्म होने और उसमें लोगों की जम्मिेदारी की तरफ भी इशारा कयिा गया है।

और अंतभाषण में इस बात को बयान कयिा गया है कि बनी इस्राइल कसि तरह औरतों के चक्कर और उनके फतिनों में गरिफ्तार थे। फरि आखरि में हमें उनकी मुखालफित करने का आदेश दयिा गया है। और आदतों और मामलों में उन जैसा बनने से मना कयिा गया है। क्योंकि वह इस दुनयिा में सबसे बुरी कौम गुजरी है उससे बुरी कोई कौम न हुई सवािय उन लोगों के जन्हिोंने उसमें से तौबा कर ली और ईमान लाकर नेक काम कएि। लेकनि ऐसे बहुत कम लोग हुए।



जो मुसलमान का अधिकार है और जो उस पर अधिकार है उसमें वसियत करने का हुक्म।

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - أَنَّ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَا حَقُّ امْرِئٍ مُسْلِمٍ لَهُ شَيْءٌ يُوصِي فِيهِ يَبِيتُ لَيْلَتَيْنِ إِلَّا وَوَصِيَّتُهُ مَكْتُوبَةٌ عِنْدَهُ".

तर्जुमा: हज़रत अ़ब्दुल्लह बनि उ़मर रद़यिल्लाहु अ़नहुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"जो मुसलमान अपनी किसी चीज़ के बारे में वसयित करना चाहता है उसके लिए दो रातें भी बिना वसयित लिखे गुजारना जायज़ नहीं है। बल्कि वसयित उसके पास लिखी हुई होना चाहिए।"



जो मुसलमान का अधिकार है और जो उस पर अधिकार है उसमें वसियत करने का हुक्म।

क्योंकि जिंदगी का कुछ पता नहीं। मौत किसी भी समय अचानक आ सकती है। लिहाज़ा अगर वह अपने माल में वसयित न करे जिससे वह अपना माल अपने वारिसों के लिए महफूज़ कर सके तो वह उनके अधिकारों को बर्बाद करेगा और अपनी जिम्मेदारी में भी कोताही करने वाला शुमार किया जाएगा। और अपने सर पर इस गुनाह का वबाल उठाएगा। क्योंकि वह घर का एक जिम्मेदार व्यक्ति है और हर जिम्मेदार से उसकी जिम्मेदारी के बारे में जरूर पूछा जाएगा।

लिहाज़ा जिस माल में वह वसयित करना चाहता है अपने घरवालों को वसयित कर दे ताकि वह माल उसके लिए या उसके बच्चों और बारिसो के लिए महफूज रहे। उदाहरण के लिए वह कहे: "फुलाने फुलाने पर मेरा इतना इतना माल है। या फुलानी फुलानी जगा मेरा इतना इतना माल है। या मुझ पर फुलाने का इतना माल है।" ताकि वारिसि सही से उसका तरका जमा कर लें और उसके हक में अपनी जिम्मेदारी को पूरे तौर पर अदा कर दें।

सही यही है कि जब माल ज़्यादा हो तो इस तरह की वसयित करना जरूरी है। लेकिन कुछ फुक़हा जाहिरी हदीस को देखते हुए कहते हैं कि माल कम हो या ज़्यादा यह वसयित जरूरी है।



तुम धर्म वाली (दीनदार, धार्मिक औरत) को हासिल करो।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "تُنْكَحُ الْمَرْأَةُ لِأَرْبَعٍ: لِمَالِهَا، وَلِحَسَبِهَا، وَلِجَمَالِهَا، وَلِدِينِهَا، فَاظْفَرْ بِذَاتِ الدِّينِ تَرِبَتْ يَدَاكَ"

तर्जुमा: हज़रत अबू हुरैरा रद़यिल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"औरत से चार कारणों की बुनयिाद पर ववािह कयिा जाता है: धन की वजह से, वंश की बुनयिाद पर, सुंदरता की काराण और धर्म की वजह से। तो तुम धर्म वाली धर्म वाली (दीनदार, धार्मकि औरत) को हासलि करो। तुम्हारे हाथ मट्टिी में मलिें।"



तुम धर्म वाली (दीनदार, धार्मिक औरत)
को हासिल करो।

शादी महत्वपूर्ण मक़सदों में से एक है। क्योंकि इसी से वंश की सुरक्षा है और इसी से अल्लाह की जमीन पर उस तरह से इंसानी पैदावार होती है जैसा के इस सारी दुनिया को पैदा करने वाला अल्लाह तआ़ला अपने बंदों से चाहता है।

मर्द और औरत इस खलिफत में दोनों एक दूसरे के शरीक हैं और अल्लाह की सीमाओं को स्थापति करने और अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने में एक दूसरे के मददगार हैं। इस तौर पर कि उनमें से हर एक दूसरे के लिए उसके लक्ष्य को पूरा करने का सहारा और इस रास्ते में अपनी ताकत के हिसाब से बोझ बर्दाश्त करने में दूसरे का साथी है।

माननीय और महान नसब या वंश को खास तौर पर शादी के मामले में लोगों के बीच बड़ी अहमयित हासिल है। क्योंकि यह दोनों परिवारों के दरमयिान एक तराजू है। लिहाज़ा जरूरी है कि दोनों परिवारों में भौतिक और आध्यात्मिक रूप से बराबरी हो। ताकि किसी एक परिवार को किसी तरह का कोई नुकसान न पहुंचे।



तुम धर्म वाली (दीनदार, धार्मिक औरत)
को हासिल करो।

बहुत से ऊलमा ए करिम के नजदीक नस्ल या वंश में बराबरी शादी के लिए शर्त है इस तौर की मर्द वंश में औरत की हैसियत का हो। क्योंकि औरत उसी से पहचानी जाती है। लहिाज़ा अगर कोई व्यक्ति किसी अच्छी नस्ल वाली औरत को चाहता हो तो यह अच्छी बात है बशर्ते कि अच्छे वंश के साथ साथ वह औरत दीनदार भी हो ताकि गलतियों में पढ़ने से महफूज रह सके।

इसी वजह से नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:" तो तुम धर्म वाली(दीनदार, धार्मकि औरत) को हासलि करो।" यानी उसे ही अपना लक्ष्य बनाए रखें और वही असली सद्धिान्त होना चाहिए। क्योंकि दीनदार औरत से शादी करने में तुम्हारी भी मदद है और तुम्हारे दीन की भी।

क्योंकि दीनदार (धार्मकि) औरत की खूबसूरती उसके अखलाक और उसके अच्छे काम में है। क्योंकि वह ऐसे धर्म को थामे हुए है जो उसकी हफिाज़त करता है। अतः वह धर्म उसे हर एक ऐबदार चीज से महफूज रखता है और हर उस चीज से संवारता है जसिसे उसकी खूबसूरती में ज़्यादती होती है। तथा उस दीनदार औरत की सारी दौलत भी उसका धर्म और दीन ही है। क्योंकि वह बरकत वाली होती है। उसकी वजह से अल्लाह कम को बहुत ज्यादा कर देता है। क्योंकि धार्मकि औरत ज़्यादातर थोड़ी चीज पर राजी हो जाती है।



तुम धर्म वाली (दीनदार, धार्मिक औरत)
को हासिल करो।

और उसके अंदर किसी तरह का लालच नहीं होता कि जिसकी वजह से वह पति से ऐसी चीज मांगे जो वह लाकर नहीं दे सकता। अतः वह खर्च के मामले में संतुलन से काम लेती है। क्योंकि उसके धर्म ने उसे यही सिखाया होता है। लिहाज़ा दीनदार औरत के काम में, उसकी बात में और हालत में बाहरी खूबसूरती भी नजर आती है और अंदरूनी भी।

अत: उसकी बात में सच उसका ज़ेवर होता है। उसके काम में ईमान उसका सिगार होता है। और उसकी हालत में संतुलन उसकी विशेषता होता है। लिहाज़ा अगर कभी गुस्सा भी करती है तो आपे से बाहर नहीं होती है और न ही उसकी वजह से होश व हवास खोती है।



ज़्यादा प्यार करने वाली और ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी करो।

عَنْ مَعْقِل بْن يَسَار- رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْه وَسَلَّمَ فَقَالَ إِنِّي أَحبَبْتُ امْرَأَةً ذَاتَ حَسَب وَجَمَال وَإِنَّهَا لَا تَلِدُ أَفَأَتَزَوَّجُهَا؟ قَالَ: "لَا" ثُمَّ أَتَاهُ الثَّانِيَةَ، فَنَهَاهُ، ثُمَّ أَتَاهُ الثَّالِثَةَ، فَقَالَ: "تَزَوَّجُوا الْوَدُودَ الْوَلُودَ فَإِنِّي مُكَاثِرٌ بِكُمْ الْأُمَمَ".

तर्जुमा: ह़ज़रत मअ़क़लि बनि यसार रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि एक व्यक्ति नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और बोला: "मुझे एक औरत का रश्ता मलि रहा है जो अच्छे नसब (वंश) वाली और सुंदर है। लेकनि बच्चे पैदा करने के लायक नहीं है।



ज़्यादा प्यार करने वाली और ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी

तो क्या मैं उससे शादी कर लूँ? नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"नहीं।"वह व्यक्ति दोबारा आया (और यही पूछा।) तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उससे मना कर दिया। वह तीसरी बार फिर से आए तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:" ज़्यादा प्यार करने वाली और ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी करो। क्योंकि मैं (क़यामत के दिन) तुम्हारे ज़्यादा होने की वजह से दुसरी उम्मतों पर गर्व करूंगा।"

बच्चे पैदा करना शादी का सबसे बड़ा फायदा और सबसे महत्वपूर्ण मकसद है। बल्कि वही अस्ल मकसद है। बाकी दुसरी चीजें तो उसके साथ शामिल हैं। बच्चों की ख़्वाहिश व इच्छा करना वाजिब कफ़िया है यानी अगर सभी लोग बच्चों की इच्छा छोड़ दें और बच्चे पैदा करना न चाहें तो सभी गुनाहगार होंगे। इसका कारण यह है कि बच्चों के जन्म पर ही कयामत तक मानव जाति की सुरक्षा और इंसानियत का वजूद (अस्तित्व) निर्भर है।



ज़्यादा प्यार करने वाली और ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी

इसी वजह से तो अल्लाह ने शादी को जायज़ किया और उसके लिए ऐसा बारीक और मजबूत तथा बेहतर सिस्टम बनाया जो प्यार और मोहब्बत और दया की छाया में पति-पत्नी में हर एक के अधिकार का पूरा ख्याल रखता है। और उन्हें ऐसे अंदाज में बच्चे पैदा करने पर उभरता है जिससे उन्हें बच्चों की जरूरत और उनकी इच्छा महसूस हो। और वह इस नेमत पर अपने अल्लाह का शुक्रिया अदा करें।

इसीलिए नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: "ज़्यादा प्यार करने वाली और ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी करो। क्योंकि मैं (क़यामत के दिन) तुम्हारे ज़्यादा होने की वजह से दुसरी उम्मतों पर गर्व करूंगा।" लिहाजा बांझ और बच्चे पैदा ना करने वाली औरत से शादी की मनादी के बारे में नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह साफ वसियत है।

हदीस़ शरीफ में "अल वदूद" शब्द आया है जिसका मतलब है जो अपने पति, पड़ोसियों, उसके रिश्तेदारों और अपने रिश्तेदारों से ज्यादा मोहब्बत करती हो। जिसकी फितरत में मोहब्बत हो।



ज़्यादा प्यार करने वाली और ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी

बनावटी मोहब्बत न हो। क्योंकि बनावटी मोहब्बत का जल्द ही भांडा फूट जाता है जसिके कारण फरि उसे पति और उसके घर वालों के सामने बेइज्जती का सामना करना पड़ता है। और फरि नतीजा यह होता है कि हालात बगिड़ जाते हैं और बुरी स्थिति हो जाती है। क्योंकि तबीयत और फितिरत बनावटी आदत पर हमेशा गालबि आ जाती है।

तथा हदीस पाक में "अल वलूद" का शब्द आया है। इसका मतलब है वह औरत जो ज्यादा बच्चे पैदा करती हो यानी एक साल में एक बार जानती हो जसिकी वजह से उसका पति उससे खुश हो जाता है खासतौर पर जब कि वह बच्चा लड़का हो। क्योंकि अरब के लोग पहले भी लड़कियों से ज्यादा लड़कों को पसंद करते थे और अभी भी। हालांकि लड़कियाँ माता-पिता के लिए दुनिया में भी भलाई हैं और आखरित में भी। काश इस तरह के लोग यह जान पाते।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले ने ज्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी करने पर उभारा है ताकि नेक नस्ल (वंश) ज़्यादा हो और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कयामत के दिन अपनी उम्मत के ज़्यादा होने की वजह से दूसरी उम्मतों पर गर्व करें।



ज़्यादा प्यार करने वाली और ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी

और हाँ जहाँ तक बुरी नस्ल का सवाल है तो नबी ए करीम सल्लल्लाहू का उससे कोई नाता नहीं है। न ही वह आपको जानती है और न ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। लहिाज़ा वह ऐसे ही है जैसे कि बाढ़ का कूड़ा-कचरा जसिमें राई के दाने बराबर भी इस्लाम नहीं है।



इस निकाह (विवाह) का ऐलान करो।

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - أَنَّ رَسُولُ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
قال: "أَعْلِنُوا هَذَا النِّكَاحَ وَاجْعَلُوهُ فِي الْمَسَاجِدِ وَاضْرِبُوا عَلَيْهِ بِالدُّفُوفِ

तर्जुमा: ह़ज़रत आ़एशा रद़यिल्लाहु अ़न्हा कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "इस निकाह (विवाह) का ऐलान करो। इसे मस्जिदों में करो। और इसमें दफ़ें बजाओ।"



इस निकाह (विवाह) का ऐलान करो।

नकिाह एक पाक बंधन और मजबूत वचन है जो पत-ि पत्नी में से हर एक दूसरे की खातरि लेता है और जसिके नतीजे में अल्लाह की रखी हुई सीमाओं के अंदर एक दूसरे से आनंद लेना जायज हो जाता है।

तथा यह एक फतिरती सुन्नत और जीवन की सख्त जरूरतों में से एक ज़रूरत भी है। इसी से परविारों और समाजों में बंधन मजबूत होते हैं। इसी से नस्ल की सुरक्षा होती है और धरती आबाद होती है।

इस बंधन की शान यह है कि घर वालों, पड़ोसयिों और पत-ि पत्नी के सारे जानने वालों के दरमयिान इस की शोहरत होना चाहएि ताकि पत-ि पत्नी लोगों की बातों से सुरक्षति रहें और उनकी इज्जत पर कोई धब्बा न आए। इसी वजह से नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहस्सिलाम वसल्लम ने पत-ि पत्नी के घरवालों को यह वसयित की कि वे अपने समय में चलने वाले मशहूर तरीकों से रोज़ाना आने जाने की जगह यानी मस्जदिों में उनके नकिाह का ऐलान करें। इस ह़दीस़ शरीफ में तीन वसयितें हैं:

पहली वसयित: यह है कि जायज़ तरीकों से नकिाह का ऐलान कयिा जाए। और ऐसे बहुत से तरीके हैं। नकिाह को मशहूर करने के लएि लोगों में बहुत सी रस्में होती हैं। तो जो उनमें अच्छी हो इस्लाम ने उसे जायज़ कहा है। और जो बुरी है उससे मना कयिा है।



इस निकाह (विवाह) का ऐलान करो।

दूसरी वसयित: उस जगह को बताना है जहाँ नकिाह का ऐलान कयिा जाए और वह जगह मस्जदिें हैं जनिमें हर नमाज में अल्लाह के नेक बंदे जमा होते हैं। लहिाजा यह जमीन के ऊपर सबसे अच्छी सबसे पवत्रि जगह है। जैसा कि नकिाह सबसे पवत्रि बंधन और अक़द है। लहिाज़ा उसमें कोई ताज्जुब की बात नहीं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मस्जदि में इसके ऐलान करने का आदेश दयिा है। तथा इसमें बहुत से फायदे भी हैं जनिमें से कुछ नम्निलखिति हैं:

एक यह के अल्लाह इस बंधन में बरकत फरमाता है। पति-पत्नी पर अपनी दया और कृपा की बारशिें करता है। और उनमें प्यार और मोहब्बत बढ़ाता है।

और एक फायदा यह है कि अल्लाह के पवत्रि घर में अल्लाह को हाजरि जानकर जमीन के ऊपर सबसे बेहतरीन जगह में सच, खुलूस और अच्छे व्यवहार का पति-पत्नी एक दूसरे से वादा करते हैं।



इस निकाह (विवाह) का ऐलान करो।

लहिाज़ा सुकून और वकार से भरपूर रहकर मस्जदि से बाहर नकिलते हैं। और अपने अंदर ऐसा इत्मीनान और सुकून महसूस करते हैं कि अगर मस्जदि के अलावा कसिी और जगह मैं यह नकिाह होता तो ऐसा कभी महसूस न करते। और जब जब वे उस जगह को देखते हैं तो उनकी याद ताजा हो जाती है और उन्हें उनका वचन याद आ जाता है जसिकी वजह से उनमें प्यार और मोहब्बत बढ़ जाता है। तथा जो भी नकिाह अल्लाह की आज्ञा का पालन करने और अल्लाह की नजदीकी से शुरू होता है तो वह ऐसा बंधन है कि इंशाअ अल्लाह कभी नहीं टूटेगा। लहिाज़ा पति-पत्नी में से हर एक को खुश होना चाहिए। और हाँ याद रहे कि सारी खुशी अल्लाह ही की आज्ञा का पालन करने और उसी की तरफ लो लगाने में हैं।

तीसरी वसयित: यह है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नकिाह में दफ़ बजाने का आदेश दयिा। और हाँ याद रहे कि यह दफ़ मस्जदिों के अलावा जगहों में बजाई जाए।



क्या तुम्हारे साथ लहव (दफ़ बजाने वाला)
न था?

عَنْ عَائِشَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - أَنَّهَا زَفَّتْ امْرَأَةً إِلَى رَجُلٍ مِنْ الْأَنْصَارِ فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَا عَائِشَةُ، مَا كَانَ مَعَكُمْ لَهْوٌ؟ فَإِنَّ الْأَنْصَارَ يُعْجِبُهُمْ اللَّهْوُ".

तर्जुमा: ह़ज़रत आ़एशा रद़यिल्लाहु अ़न्हा कहती हैं कि वह एक दुल्हन को (वदिा करने) उनके पति एक अंसारी मर्द के पास लेकर गाई। तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "ए आ़एशा! क्या तुम्हारे साथ लहव (दफ़ बजाने वाला) न था? क्योंकि अंसारी को दफ़ पंसद है।"

क्या तुम्हारे साथ लहव (दफ़ बजाने वाला) न था?

खुशी का इजहार करने के लिए लोगों के अपने अपने वभिन्नि प्रकार के तरीके और आदतें हैं। कुछ तो इस्लाम ने जायज़ करार दिए हैं। और कुछ को नजायज़ कहा है। जबकि उनमें कुछ ऐसे भी हैं जिनमें से अखलाक़ी या सामाजि बुराइयों को दूर करने के बाद उन्हें जायज़ करार दिया है।

इस्लाम जैसा कि हमें मालूम है फितिरत का धर्म है। तो जो फतिरत के मुताबकि चीजें होती हैं उनसे इस्लाम मना नहीं करता है बल्कि उन्हें संवार कर जायज़ रखता है। और जो चीज़े फतिरत या उसकी जरूरतों के खलिाफ होती हैं या उस पर बुरा असर डालती हैं उन्हें दूर कर देता है। लहिाज़ा जब तक लोग अल्लाह की बनाई हुई अपनी फतिरत पर रहेंगे हैं ठीक रहेगें। इसी कारण इस धर्म को फतिरत का धर्म कहा जाता है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फरमान :" क्या तुम्हारे साथ लहव (दफ़ बजाने वाला) न था?" ज़ाहरि में तो सवाल है। लेकनि इससे दफ़ बजाने पर उभारना मकसूद है।

ह़दीस़ पाक में "लहव" शब्द आया है। इसका मतलब है दफ़ बजाना या कुछ गाना। इसे "लहव" इसलएि कहा गया है कि लोग इसके द्वारा अपनी खुशी का इजहार करते हैं और आने वाली भलाई की एक दूसरे को खुशखबरी देते हैं।

क्या तुम्हारे साथ लहव (दफ़ बजाने वाला) न था?

गुजरी हुई चीजों के अलावा इस ह़दीस़ पाक से यह भी लयिा जाता है कि शादी अल्लाह की एक बहुत बड़ी नेमत है। और यह की जायज़ तरीके से इसका इजहार करना इस नेमत पर अल्लाह का शुक्र अदा करना है। लहिाज़ा हर मुसलमान को चाहएि कि वह यही नयित करे ताकि वह इस खुशी के इजहार करने के लएि जो भी कुछ करे उस पर उसे सवाब (पुण्य) मलि। क्योंकि मोमनि अगर अपनी सांसो को भी अल्लाह के रास्ते में खर्च करे तो अल्लाह उन्हें शुमार करता है और उन पर उसे सवाब देता है।

इस ह़दीस़ पाक से यह भी लयिा जाता है कि इस तरह के मौकों पर जायज़ खेलकूद मुस्तह़ब (पसंदीदा) है। तो जो उसे नहीं करता वह अपने आप को भी उस जायज़ खेलकूद से आनंद लेने से महरूम रखता है और पति-पत्नी को भी। अतः जीवन में अगर इस तरह की के खुशी के मौके और लम्हे न हों कि जिनिमें इंसान कुछ आनंद ले सके तो उसका मानसकि और दमिागी संतुलन ही बगिड़ जाएगा और उसका जीवन तंग होकर रह जाएगा।

लहिाज़ा हम में से हर एक को सख्ती, ज़्यादती और बनिा जाने हुए कसिी भी चीज़ को जायज़ या नाजायज़ कहने से डरते रहना चाहएि। क्योंकि यह अल्लाह पर झूठ बांधना है जसिसे हर एक को बचना चाहएि और तौबा करनी चाहएि।



क्या तुम्हारे साथ लहव (दफ़ बजाने वाला) न था?

दफ़ बजा कर और जायज़ चीज़े गाकर शादी की खुशी का इजहार करने से पत-ि पत्नी और उनके परविार वालों के दरमयिान मोहब्बत पैदा होती है।और एक लंबे समय तक उनके और खासकर पत-ि पत्नी के दमिाग में ये यादगार लम्हे रहते हैं।

तथा यह चीज बहुत सी बमिारयिों के इलाज का कारण है जो शायद इसी से दूर होती हैं। जैसे कि मानसकि दबाव (repression), अंतर्मुखता (introversion) और आत्म- संदेह (self-doubt) आदि मानसकि बीमारयिाँ जनिका इलाज कभी कभी डाक्टर भी नहीं कर पाते हैं।



ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई और वह भलाई मांगता हूँ जिस पर तू ने इसे पैदा किया है।

عَنْ عَمْرو بْن شُعَيْب عَنْ أَبيه عَنْ جَدِّه أَنَّ النَّبيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْه وَسَلَّمَ قَالَ: "إِذَا تَزَوَّجَ أَحَدُكُمْ امْرَأَةً، أَوْ اشْتَرَى خَادِمًا، فَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْه.

"وَإِن اشْتَرَى بَعِيراً، فَلْيَأْخُذْ بِذِرْوَةِ سَنَامِهِ، وَلْيَقُلْ مِثْلَ ذَلِكَ.

तर्जुमा: ह़ज़रत अ़म्र बनि शुऐब अपने पिता से और उनके पिता उनके दादा से उल्लेख करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"जब तुम में से कोई व्यक्ति शादी करे या कोई गुलाम खरीदे तो यह दुआ पढ़े:



ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई और वह भलाई मांगता हूँ जिस पर तू ने इसे पैदा किया है।

"اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَمِنْ شَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ"

उच्चारण: अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका खैरहा व खैरा मा जबल्तहा अलैहि, व अऊज़ो बकि मनि शर्रहि व मनि शर्रे मा जबल्तहा अलैहि।

अर्थ : "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई और वह भलाई मांगता हूँ जसि पर तू ने इसे पैदा कयिा है। तथा मैं इसकी बुराई और उस बुराई से तेरे शरण में आता हूँ जसि पर तू ने इसे पैदा कयिा है।" और अगर ऊंट खरीदे तो उसके कोहान को पकड़ कर यह दुआ पढ़े।"

और एक दुसरी रवियत में है: "फरि और पत्नी और गुलाम के सामने के भाग (पेशानी) को पकड़ कर बरकत की दुआ करे।"

नेक पत्नी दुनयिा की भालाईयों में से एक बड़ी भलाई और मर्द पर अल्लाह की नेमतों में से एक महान नेमत है। क्योंकि वह इसके साथ मानसकि और शारीरकि सुकून और इत्मीनान महसूस करता है जसिमें अपनी जान और तसल्ली पाता है। अपने बच्चों की परवरशि, अपने घर की सुरक्षा और अपने मामलों में उस पर भरोसा करता है। उससे उसे हर वह चीज मलिती है जसिकी हर मर्द अपनी उस पत्नी से इच्छा रखता है जसि हासलि करने में वह अपनी सारी कोशशि है लगा देता है। लहिाज़ा नेक महलिा नेकी व परहेज़गारी के बाद एक मर्द को नसीब होने वाली सबसे बड़ी दौलत है।



ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई और वह भलाई मांगता हूँ जिस पर तू ने इसे पैदा किया है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़रमाने "तुम में से कोई व्यक्ति जब किसी औरत से शादी करे।" का मतलब है कि जब वह औरत उसके पास आए और अपने आप को उसे सौप दे तो वह अल्लाह की दलि और ज़ुबान से तारीफ बयान करे। और नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर दुरूद भेजने के बाद उसके माथ पर हाथ रख कर ह़दीस़ शरीफ में आई हुई दुआ पढ़े।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़रमान: "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई और वह भलाई मांगता हूँ जसि पर तू ने इसे पैदा कयिा है।" का मतलब है कि मैं तुझ से यह दुआ करता हूँ कि जो भलाई इसके अंदर है उससे मुझे फायदा पहुंचा। इसके जरएि तू मुझे हराम व नाजायज काम से बचा। हराम चीजों को देखने से मुझे दूर रख। इसके धन और सुंदरता से -जब के धन और सुंदरता वाली- हो मुझे फायदा पहुंचा। इसके द्वारा मेरी तन्हाई में सुकून पैदा फरमा। मेरे गम को दूर कर। इसे पहले अपनी आज्ञा का पालन करने की और बाद में मेरी आज्ञा का पालन करने की क्षमता अता फरमा। इसके द्वारा मुझे बेटयिाँ और बेटे दे। और इन जैसी दुसरी नेक दुआएं जो भी दुआ करने वाले पति के दमिाग में आएं। क्योंकि शब्द "भलाई" पछिली तमाम चीजों को शामलि है और इनके अलावा को भी।



ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई और वह भलाई मांगता हूँ जिस पर तू ने इसे पैदा किया है।

तो जब-जब दुआ करने वाला इस दुआ़ को करेगा चाहे इन शब्दों के साथ करे या इनके मानों के साथ तो यह अल्लाह के यहाँ पसंदीदा होगा। और इस दुआ को दोहराना इंशाअ अल्लाह उसके स्वीकार होने का कारण होगा। और ताकि पति की यह दुआ़ कुबूल हो तो उसके लिए यह भी जरूरी है कि वह अपनी पत्नी के लिए भी यह दुआ करे कि अल्लाह उसे उसकी भलाई दे और उसकी बुराई से उसे सुरक्षित रखे। और औरत के लिए भी यह मुस्ताहब (पसंदीदा) है कि वह भी अपने लिए ऐसी ही दुआ करे जैसे कि उसका पति अपने लिए कर रहा है।

ऐसी स्थिति में दुआ़ करने से पति-पत्नी को इत्मीनान और सुकून हासिल होगा और उनके दरमियान मोहब्बत बढ़ेगी। क्योंकि उनमें से हर एक को दूसरे से हमेशा भलाई ही मिलने का एहसास होगा।

यह दुआ सिर्फ पहली मुलाकात ही तक सीमित नहीं है बल्कि पति-पत्नी में से जब भी किसी को दूसरे की तरफ से किसी तरह की बुराई महसूस हो या बुराई आने का खतरा हो तो वह यह दुआ करें। हाँ अलबत्ता पहली मुलाकात में यह दुआ जरूर करें।



Rasoulallah.net
LiseOnSunnah Rasoulallah RasoulAllahnet RasuseulAllah_net

औरतों में जाने से बचो।

عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ- رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِيَّاكُمْ وَالدُّخُولَ عَلَى النِّسَاءِ" فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ الْأَنْصَارِ: يَا رَسُولَ اللَّهِ! أَفَرَأَيْتَ الْحَمْوَ قَالَ الْحَمْوُ الْمَوْتُ".

तर्जुमा: हज़रत उक़बा बनि आमरि रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "औरतों में जाने से बचो।" तो एक अंसारी सहाबी ने पुछा: "ए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु! देवर (या जेठ) के बारे में आप क्या कहते हैं? (वह अपने भाभी के पास जा सकता है या नहीं?)" तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "देवर (या जेठ) तो मौत (तबाही) है।"



औरतों में जाने से बचो।

इस्लाम हमेशा इज्जत और आबरू की हफिाजत करता है और हमेशा बुराई, छेड़छाड़ और उसे हर तरह की अफवाह से बचाने की कोशशि में रहता है।

एक सच्चे मोमनि के लएि उसके धर्म और उसकी इज्जत से बढ़कर कोई चीज नहीं है। उसका धर्म ही उसके मामले की सुरक्षा और उसकी बुद्धि और सोच का बादशाह है। उसके आदेशों का पालन करने में कभी कोताही नहीं करता है। न ही अपने अल्लाह के अधकिार में कमी करता है और न ही अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नतों में लापरवाही बरतता है। धर्म और इज्जत आबरू की हफिाज़त ही के मकसद से नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शक में पढ़ने से चेतावनी दी। क्योंकि शक ज्यादातर हराम काम करने या अफवाह फैलाने का कारण होता है। और इसी कारण से नबी करीम ए सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अजनबी औरतों के पास जाने से मना कयिा। क्योंकि सर्फि उनके पास जाना ही संदेह या शक का कारण है। और हो सकता है कि वह फतिने में पड़ जाए खासकर जब आना जाना इतना ज्यादा हो जाए कि वशिेष समाज में भी उसको बुरा न समझा जाए हालांकि ऐसे गलत समाज का कोई ऐतबार नहीं न तो धार्मकि कसिी मामले में और न ही दुनयिावी कसिी मामले में।



औरतों में जाने से बचो।

और जो ऊपर बयान की हुई ह़दीस़ शरीफ में सोच वचिार करे तो उसे अच्छी तरह यह पता चल जाएगा कि कब औरतों के पास जाना चाहएि और कब नहीं। कनि औरतों के पास जाना जायज है और कनि के नहीं। और शादी के लएि कनि शर्तों का पाया जाना जरूरी है। तथा यह भी जान लेगा कि इस और इस जैसी दुसरी वसयितों की आज्ञा का पालन करने में लापरवाही बरतने से आने वाले और जसिके पास आ रहा है उसके लएि कतिना बड़ा खतरा है।

अगर कोई व्यक्ति अपने लएि मौत का खौफ खाता है तो उसे अपने आप पर, अपनी पत्नी और अपनी इज्जत और आबरू पर उस करीबी व्यक्ति से खौफ खाना चाहएि कि जो इजाजत या बनिा इजाजत के जब चाहे घर में घुसा चला आता है कि जिसे समाज में बुरा नहीं समझा जाता। और जब उससे इस बारे में पूछा जाए या मना कयिा जाए या शर्म दलिाई जाए तो कहता है: "तुम्हें क्या? यह तो मेरे भाई का घर है। इसमें तो मेरी भाभी रहती हैं। कोई अंजान औरत थोड़ी है।" आदि आदि उल्टे सीधे जवाब देता है।

मेरे प्यारे भाई याद रखो कि हक और सही बात इसके ज्यादा लायक है कि उसे अपनाया जाए। और हक बात यही है कि बनिा इजाजत आने वाले व्यक्ति से अपने घर को बचाओ खासकर अपने और अपनी पत्नी के रश्तिेदारों या मलिने जुलने वालों से।



Rasoulallah.net

LiseOnSunnah Rasoulallah RasoulAllahnet RasusoulAllah_net

कोई भी व्यक्ति किसी भी अजनबी औरत के साथ उसके महरम (वह करीबी व्यक्ति जिससे उसका विवाह जायज़ न हो।) के बगैर हरगिज तन्हाई इख्तियार न करे।

عَنْ ابْنَ عَبَّاسٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - عَنْ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ "لَا يَخْلُوَنَّ رَجُلٌ بِامْرَأَةٍ إِلَّا وَمَعَهَا ذُو مَحْرَمٍ، وَلَا تُسَافِرْ الْمَرْأَةُ إِلَّا مَعَ ذِي مَحْرَمٍ، فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ! إِنَّ امْرَأَتِي خَرَجَتْ حَاجَّةً وَإِنِّي اكْتُتِبْتُ فِي غَزْوَةِ كَذَا وَكَذَا. قَالَ:"انْطَلِقْ فَحُجَّ مَعَ امْرَأَتِكَ".

तर्जुमा: हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"कोई भी व्यक्ति किसी भी अजनबी औरत के साथ उसके महरम (वह करीबी व्यक्ति जिससे उसका विवाह जायज़ न हो।)



कोई भी व्यक्ति किसी भी अजनबी औरत के साथ उसके महरम (वह करीबी व्यक्ति जिससे उसका विवाह जायज़ न हो।) के बगैर हरगिज तन्हाई इख्तियार न करे।

के बगैर हरगजि तन्हाई इख्तयिार न करे। और न ही कोई औरत अपने महरम के बगैर यात्रा करे।" इसी दौरान एक व्यक्ति खड़ा हुआ और बोला:" ए अल्लाह के रसूल! मेरी पत्नी ह़ज के लिए रवाना हो चुकी है जबकि मेरा फुलाने फुलाने युद्ध में नाम लखिा जा चुका है।" तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "जाओ और अपनी पत्नी के साथ जाकर ह़ज करो।"

अजनबी या अनजान महलिा के साथ तन्हाई इख्तयिार करना शक, बुराई, वश्विासघात और फतिने का कारण है। और यह उन लोगों के लिए बहुत बड़ा गुनाह है जो इसके आदी हो चुके हैं या इसमें लापरवाही बरतते हैं या इस मामले या इसके परणिाम को हल्का समझते हैं।

महरम व्यक्ति के बगैर महलिा का इतनी दूर यात्रा करना कि जसिमें उसे नुकसान पहुंचने का खतरा हो जान को जोखमि में डालना है। तथा बनिा महरम के बनिा यात्रा करना मर्यादा, अदब और रीति-रविाज के भी खलिाफ है जसिका ख़्याल रखना ज़रूरी है।

एक बुद्धमिान और गैरतमंद व्यक्ति कभी भी अपनी पत्नी को अकेले यात्रा नहीं करने देता है भले ही वह यात्रा नेकी के लिए क्यों ना हो। बल्कि या तो वह खुद उसके साथ जाता है या फरि उसके कसिी महरम व्यक्ति को उसके साथ भेजता है।



कोई भी व्यक्ति किसी भी अजनबी औरत के साथ उसके महरम (वह करीबी व्यक्ति जिससे उसका विवाह जायज़ न हो।) के बगैर हरगिज तन्हाई इख्तियार न करे।

इस वसयित के अंदर महलिा से अकेले यात्रा करने से या कसिी अजनबी या अनजान के साथ तनहाई इख्तयिार करने से महलिा को भी और बहेसयित उसके जम्मिेदार और उसके हाकमि या शासक होने के मर्द को भी सख्त चेतावनी दी गई है। मतलब यह है कि केवल महरम की मौजूदगी में ही अजनबी व्यक्ति को कसिी महलिा से मलिना चाहएि। ऐसे ही महलिा को भी उसके महरम की मौजूदगी ही में इसकी इजाजत दी जाए। यह सर्फि इसलएि नहीं ताकि उस अजनबी के हमला करने की सूरत में वह महरम व्यक्ति अपनी करीबी महलिा का बचाव कर सके। बल्कि इसलएि भी है ताकि वह महलिा शकों व संदेहों और नादानों की अफवाहों से सुरक्षति रह सके। क्योंकि इज्जत और आबरू शुद्ध दूध की तरह है कि जसिे थोड़ी सी चीज भी गंदा कर देती है और फरि वह दोबारा कभी ऐसा नहीं हो सकता जैसे के पहले था।

जसि यात्रा में महलिाओं के साथ महरम का होना जरूरी है दूरी और दनि और रात से नर्धिारति नहीं कयिा जाएगा। बल्कि वह उस दूरी या अवधि से नर्धिारति होगा जसिमें अगर उसका कोई महरम उसके साथ न हो तो उसे नुकसान पहुंच सकता है।



कोई भी व्यक्ति किसी भी अजनबी औरत के साथ उसके महरम (वह करीबी व्यक्ति जिससे उसका विवाह जायज़ न हो।) के बगैर हरगिज तन्हाई इख्तियार न करे।

अगर औरत कहीं यात्रा करना चाहे भले ही दूर ही सही और रास्ता सुरक्षति और शांतपूर्ण हो और उसके साथ शांतपूर्ण साहचर्य (संगठन या संगत) हो तो इस संगत से महरम की भरपाई हो जाएगी। ईमाम मालकि (उन पर अल्लाह की कृपा हो।) के नजदीक शांतपूर्ण संगत की तादाद दौ पुरुष और तीन महलिाएं और ईमाम शाफई के यहाँ चार महलिाएं हैं।

इस मामले में हमें ज़्यादा सख्ती नहीं बरतनी चाहएि। बल्कि जरूरी है कि हम उन स्थतियिों को देखें जनिमें महलिा यात्रा करना चाहती है। महलिा की ताकत और क्षमता को भी देखना चाहएि कि वह अपना बचाव कर सकती है या नहीं, या अपने आप को महफूज रख सकती है या नहीं, उसे रास्ते और सभ्यता (संस्कृति) का अनुभव है या नहीं। तथा उस आबादी को भी देखना चाहएि जहाँ वह महलिा यात्रा करके जा रही है कि वह कतिनी और कैसी है। क्योंकि इन सब चीज़ों को देखते हुए हम इस्लाम की रवादारी और आसानी का ख्याल करते हुए आसानी के साथ सही हुक्म लगा सकते हैं।

ए महिलाओं के समूह! सदक़ा (दान) दो भले ही अपने गहनों में से दो।



ए महिलाओं के समूह! सदक़ा (दान) दो भले ही अपने गहनों में से दो।

عَنْ زَيْنَبَ امْرَأَةِ عَبْدِ اللَّهِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا- قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "تَصَدَّقْنَ يَا مَعْشَرَ النِّسَاءِ وَلَوْ مِنْ حُلِيِّكُنَّ" قَالَتْ: فَرَجَعْتُ إِلَى عَبْدِ اللَّهِ فَقُلْتُ: إِنَّكَ رَجُلٌ خَفِيفُ ذَاتِ الْيَدِ، وَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ أَمَرَنَا بِالصَّدَقَةِ. فَأْتِهِ فَاسْأَلْهُ. فَإِنْ كَانَ ذَلِكَ يَجْزِي عَنِّي وَإِلَّا صَرَفْتُهَا إِلَى غَيْرِكُمْ. قَالَتْ: فَقَالَ لِي عَبْدُ اللَّهِ بَلْ ائْتِيهِ أَنْتِ قَالَتْ: فَانْطَلَقْتُ. فَإِذَا امْرَأَةٌ مِنَ الْأَنْصَارِ بِبَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَاجَتِي حَاجَتُهَا. قَالَتْ: وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ أُلْقِيَتْ عَلَيْهِ الْمَهَابَةُ



ए महिलाओं के समूह! सदक़ा (दान) दो
भले ही अपने गहनों में से दो।

قَالَتْ: فَخَرَجَ عَلَيْنَا بِلَالٌ فَقُلْنَا لَهُ ائْتِ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبِرْهُ أَنَّ امْرَأَتَيْنِ بِالْبَابِ تَسْأَلَانِكَ: أَتُجْزِئُ الصَّدَقَةُ عَنْهُمَا عَلَى أَزْوَاجِهِمَا وَعَلَى أَيْتَامٍ فِي حُجُورِهِمَا؟ وَلَا تُخْبِرْهُ مَنْ نَحْنُ. قَالَتْ: فَدَخَلَ بِلَالٌ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلَهُ. فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "مَنْ هُمَا؟" فَقَالَ: امْرَأَةٌ مِنْ الْأَنْصَارِ وَزَيْنَبُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "أَيُّ الزَّيَانِبِ؟" قَالَ: امْرَأَةُ عَبْدِ اللَّهِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "لَهُمَا أَجْرَانِ: أَجْرُ الْقَرَابَةِ وَأَجْرُ الصَّدَقَةِ".

तर्जुमा: ह़ज़रत अ़ब्दुल्लह रद़यिल्लाहु अ़न्हु की पत्नी ह़ज़रत ज़ैनब रद़यिल्लाहु अ़न्हा कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"ए महलिाओं के समूह! सदक़ा (दान) दो भले ही अपने गहनों में से दो।" वह कहती हैं कि मैं (अपने पति) अ़ब्दुल्लह के पास आई और उनसे कहा:" तुम खाली हाथ हो और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमें सदक़ा देने का आदेश दयिा है। तो तुम जाकर नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछो कि अगर मैं तुम्हें दे दूँ तो सदका अदा हो जाएगा तो तो ठीक है वरना तुम्हारे अलावा कसिी और को दे दूँ। वह कहती हैं: तो अ़ब्दुल्लह रद़यिल्लाहु अ़न्हु ने मुझसे कहा तुम खुद ही जाकर नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछ लो।



ए महिलाओं के समूह! सदक़ा (दान) दो
भले ही अपने गहनों में से दो।

वह कहती हैं फिर मैं आई तो देखती हूँ कि अंसार की औरत नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दरवाजे पर खड़ी थी और उसका भी वही काम था जो मेरा था। कहती हैं और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का बड़ा डर था। वह कहती हैं तो ह़ज़रत बिलाल रद़यिल्लाहु अ़न्हु निकले तो हमने उनसे कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास जाओ और बताओ कि दो महिलाएं दरवाजे पर हैं और वह यह पूछ रही हैं कि अगर वे अपने पतियों और अपनी गोद में पलने वाले यतीम बच्चों को सदका दे दें तो क्या उनका सदक़ा अदा हो जाएगा या नहीं? और नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह न बताना कि हम कौन हैं। ह़ज़रत ज़ैनब रद़यिल्लाहु अ़न्हा कहती हैं फिर सैयदना ह़ज़रत बिलाल रद़यिल्लाहु अ़न्हु ने अल्लाह के रसूल से पूछा तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया वे कौन है? तो ह़ज़रत बिलाल रद़यिल्लाहु अ़न्हु ने बताया कि एक अंसारी महिला हैं और दूसरी ज़ैनब हैं। तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया कि कोन सी ज़ैनब? तो ह़ज़रत बिलाल ने बताया कि अ़ब्दुल्लह की पत्नी। तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ह़ज़रत बिलाल रद़यिल्लाहु अ़न्हु से फरमाया:"उनको उसमें दोहरा सवाब है। एक तो रिश्तेदारी का और दूसरा सदक़े का।"



ए महिलाओं के समूह! सदक़ा (दान) दो
भले ही अपने गहनों में से दो।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मर्दों को नसीहत करने के बाद खासतौर से औरतों के लिए समय निकालते और उन्हें भी मर्दों जैसी नसीहत करते। नेक काम करने और उन पर सवाब पाने में महिलाएँ पुरुषों ही की तरह है लेकिन इसके बावजूद भी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम औरतों को खासतौर पर नसीहत करते ताकि ज़्यादा नेक काम करने और मर्दों की तरह उन्हें भी गरीबों और मसिकीनों को खाना खिलाने पर उभारें।

महिलाओं को इस विशेष रूप से नसीहत सुनने में इतनी मिठास मिलती कि कभी-कभी वह मर्दों से ज़्यादा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आज्ञा का पालन करतीं। लिहाज़ा नेक कामों में जल्दी करतीं और नमाज़, रोज़े, ज़कात और दूसरी इबादतों और नेक कामों में मर्दों से मुकाबला करतीं।

महिलाएँ रिश्तेदारों, गरीबों और मसिकीनों के मामलों में मर्दों से ज़्यादा दयालु और रहम दिल होती हैं। तथा ज़्यादा गुनाहों की वजह से उन्हें मर्दों से अधिक सदक़े और खैरात करने की जरूरत होती है। क्योंकि वह बहुत ज़्यादा गालीगलौज करती हैं। अपने पतियों की बहुत ज़्यादा नाफरमानी करती हैं। और ऐसे काम करती हैं जिनके कारण उन्हें नर्क जाना ज़रूरी हो जाता है।



ए महिलाओं के समूह! सदक़ा (दान) दो भले ही अपने गहनों में से दो।

तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फरमान:"ए महलिाओं के समूह! सदक़ा दो भले ही अपने गहनों में से दो।" से मकसूद महलिाओं को इस बात पर उभारना है कि वे अल्लाह की प्रसन्नता और उसकी खुशी के लिए अपने धन में से कुछ फकीरों, यतीमो और मसिकीनों के ऊपर खर्च करें भले ही गहनों में से क्यों न करें। गहने औरतों के लिए सबसे कीमती चीज होती है। इसीलिए बनाओ-सिंगार और दखिावे की चाहत की वजह ज्यादातर अपने गहनों में से कुछ खर्च नहीं करना चाहती हैं। तो गोया कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उनसे कह रहे हैं कि अपने धन में कंजूसी न करो भले ही वह तुम्हें कितने ही प्यारा क्यों न हो। क्योंकि आखरित उससे बेहतर है और हमेशा रहने वाली है। और बंदे को अच्छा सवाब उसी समय मलिेगा जबकि वह अपनी पसंदीदा चीज खर्च करे। और संभव है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फरमान "भले ही अपने गहनों में से।" उनके पास मौजूद धन या फरि ऐसी कीमती चीजों में कंजूसी करने के बहाने को खत्म करने के लिए हो जनिकी वजह से वे सदक़ा नहीं कर सकती हों।

याद रखें कि सदक़ा का सवाब अच्छी नयित और देने वाले की स्थिति के हसिाब से मलिता है।



बुरे गुमान (या बुरी सोच व शक) से बचो।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولُ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْه وَسَلَّمَ قَالَ: "إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ؛ فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الْحَدِيثِ، وَلَا تَحَسَّسُوا، وَلَا تَجَسَّسُوا، وَلَا تَبَاغَضُوا، وَلَا تَدَابَرُوا، وَكُونُوا عِبَادَ اللَّهِ إِخْوَانًا

तर्जुमा: हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"बुरे गुमान (या बुरी सोच व शक) से बचो। क्योंकि बुरा गुमान सबसे बड़ा झूठ है। आपस में एक दूसरे की बुराई न ढूंढो। न एक दूसरे की जासूसी करो। न एक दूसरे से नफरत करो। और न ही पीठ पीछे किसी की बुराई करो। (या न एक दूसरे से पीठ फेरो।) बल्कि अल्लाह के बंदे भाई भाई हो जाओ।"



बुरे गुमान (या बुरी सोच व शक) से बचो।

इस्लामी शरीयत के आदेश और नयिम सच और यकीन पर आधारति हैं न कि गुमान और अंदाजे पर। इसीलएि इस्लाम के अक़ीदे और शरयित के नयिम नश्चिति और यकीनी हैं। न इसमें कोई शक है और न कसिी तरह का कोई वरिोधाभास (इख्तलिाफ)।

इस्लाम मुसलमान को शक और उसकी तबाह कारयिों, नफ्स के खतरों और शैतान की चालों और उसके वसवसों से महफूज रखता है। इंसान अपने दलि का कैदी होता है। अगर दलि सही है तो इंसान भी सही है और अगर दलि खराब है तो इंसान भी खराब है। और दलि उसी समय सही हो सकता है जबकि वह बनिा वजह के इधर-उधर से आने वाले शकों और संदेहों को छोड़ दे।

क्योंकि इस तरह के शक और संदेह दलि गंदा कर देते हैं और उसकी चमक-दमक और इत्मीनान व सुकून को खत्म कर देते हैं। इसीलएि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस वसयित के अंदर बुरी सोच या बुरा गुमान करने से सख्त तौर पर मना फ़रमाया। अतः आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया: "बुरे गुमान से बचे रहो। क्योंकि बुरा गुमान सबसे बड़ा झूठ है।"



बुरे गुमान (या बुरी सोच व शक) से बचो।

बुरा गुमान अल्लाह के यहाँ भी सबसे बड़ा झूठ है और लोगों के यहाँ भी।

याद रहे कि गुमान दो तरह का होता है एक तो अच्छा गुमान जो भलाई का कारण होता है और बुरी आस्था तक पहुंचाने वाले शक को दूर रखता है।

और दूसरा बुरा गुमान जो इज्जत व आबरू से खिलवाड़, मासूमों के साथ धोखाधड़ी और लोगों के दरमियान फितने व फसाद का कारण होता है।

हमें मालूम है कि दिल की सच्चाई ही द्वारा आखरित में बंदे को अल्लाह के आजाब से छुटकारा मिलेगा। लहिाज़ा हर मुसलमान को चाहिए कि जहाँ तक हो सके वह अपने मुसलमान भाई के बारे में अच्छा सोचे।

अगर आपके दिल में कोई बुरा गुमान या बुरी सोच बैठ जाए तो जासूसी और कमियाँ तलाश करके उसकी तहकीक करने की कोशिश न करें। और अगर आपको किसी चीज से अपशगुनी महसूस हो तो आप उसे शुभ में बदल दें और अल्लाह पर भरोसा रखते हुए गुज़र जाएं।



नर्मी (कोमलता) से काम लो।

عَنْ شُرَيْح بْنِ هَانِئ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - قَالَ: رَكِبَتْ عَائِشَةُ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعِيرًا فَكَانَتْ فِيهِ صُعُوبَةٌ فَجَعَلَتْ تُرَدِّدُهُ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : "عَلَيْكِ بِالرِّفْقِ فَإِنَّ الرِّفْقَ لَا يَكُونُ فِي شَيْءٍ إِلَّا زَانَهُ، وَلَا يُنْزَعُ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا شَانَهُ".

तर्जुमा: ह़ज़रत शुरैह़ बनि ह़ानी रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा बयान करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की प्यारी पत्नी ह़ज़रत आ़एशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा एक ऊंट पर चढ़ीं। उसमें कुछ सख़्ती थी। तो ह़ज़रत आ़एशा उसे फेराने लगीं।



नर्मी (कोमलता) से काम लो।

तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उनसे फरमाया:"नर्मी (कोमलता) से काम लो। क्योंकि नर्मी जसि चीज में भी होती है उसकी शान बढ़ा देती है। और जसि से नर्मी खत्म हो जाती है वह ऐबदार हो जाती है। (या उसकी शान घट जाती है।)"

नबी ए करीम सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम जसि तरह इंसानों के साथ दयालु और रहम दलि थे इसी तरह जानवरों के साथ भी दयालु और रहम दलि थे। हर चीज के लएि आप प्यार व मोहब्बत और दया का केन्द्र थे।

इस्लाम एक ऐसा धर्म है जसिने अपनी शक्षिाओं के अंदर हकिमत या समझदारी के ऐसे नयिम व सद्धिांत रखे हैं जनिके कारण लोग आपस में भी एक दूसरे पर दया करते हैं और अपने मातहत जानवरों के साथ भी दया और रहम दलि से पेश आते हैं। क्योंकि जानवरों को इंसानों पर दया और इनाम के लएि पैदा कयिा गया है। लहिाज़ा उनके साथ नरमी बरतना, अच्छा व्यवहार करना और जहाँ तक हो सके उन्हें तकलीफ न देना यह एक तरह का उन जानवरों का शुक्रयिा अदा करना है।



नर्मी (कोमलता) से काम लो।

नरमी एक अच्छी और महान आदत और हमेशा रहने वाला सम्मान और ऐसा बेहतर व्यवहार है कि जिसिमें यह भी यह होता है उस पर हर जगह और हर जमाने में गर्व किया जाता है।

अल्लाह ने हर चीज पर दया करना अनिवार्य किया है। और एक सच्चा मोमनि अपने आप पर, अपने भाइयों पर और अपने जानवरों पर दयालु और रहम दलि होता है। तथा वह हर नजर आने वाले जानवर के साथ दयालु होता है। अगर वह प्यासा होता है तो उसे पानी पलिाता है। अगर भूखा हो तो खाना खलिाता है। अगर बनिा वजह कैद या फंसा हुआ हो तो उसे आजाद कर देता है। और अगर उसे रखना चाहे या खाने के लिए काटना चाहे तो उसके साथ नरमी से पेश आता है और अच्छा व्यवहार करता है।

सोदा बेचते समय ज़्यादा
कसमें न खाया करो।



सोदा बेचते समय ज़्यादा कसमें न खाया
करो।

عَنْ أَبِي قَتَادَةَ الْأَنْصَارِيِّ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "إِيَّاكُمْ وَكَثْرَةَ الْحَلِفِ فِي الْبَيْعِ، فَإِنَّهُ يُنَفِّقُ ثُمَّ يَمْحَقُ

तर्जुमा: हज़रत अबू क़तादह अंसारी बयान करते हैं कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुना कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "सोदा बेचते समय ज़्यादा कसमें न खाया करो। क्योंकि (झूठी) कसम से सामान तो बिक जाता है लेकिन बरकत खत्म हो जाती है।"



सोदा बेचते समय ज़्यादा कसमें न खाया करो।

बाजारों वगैरह में व्यापारियों की आदत होती है कि वे अपने सामानों और सौदों को बढ़ावा देने के लिए और लालच और हड़प की वजह से अपनी तरफ से बढ़ाई हुई कई गुना ज्यादा कीमतों में ही लोगों को अपना सामान खरीदने पर तैयार करने के लिए तरह-तरह की बड़ी-बड़ी कसमें खाते और हर तरह की चालें चलते हैं। और इसकी कुछ परवाह नहीं करते कि वह कितने कितने बड़े गुनाह कर रहे हैं जो कि दुनिया और आखरित दोनों में उनके नुकसान का कारण हैं।

उन्हीं बड़े गुनाहों में से एक यह भी है कि वह अल्लाह की बहुत ज्यादा कसमें खाते हैं हालांकि अल्लाह की कसम खाने से मना किया गया है सिवाय जरूरत के समय के जैसे कि किसी पर उसके धर्म या उसकी इज्जत के मामले में तोहमत लगाई जाए या उस पर चोरी चोरी का आरोप लगाया जाए तो ऐसी सूरत में बादशाह या जज उसे कसम खाने का हुक्म देगा या फरि दावा करने वाले से कसम खाने को कहेगा जबकि उसे लगता हो कि किसम खाने से वह बरी हो जाएगा।



सोदा बेचते समय ज़्यादा कसमें न खाया करो।

और चूंकि व्यापार में जानबूझकर या बिना जानबूझे बेचने और खरीदने वाले दोनों बहुत ज़्यादा कसमें खाते हैं। इसीलिए नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इससे सख्त तरह से मना फ़रमाया और इसके अंजाम से डराया। और बयान किया कि इससे बरकत और उसके आसार खत्म हो जाते हैं। लिहाज़ा न तो फायदा जायज होता है और ना लाभदायक। बल्कि नुकसान कसम खाने वाले जूते के तसमे (फीते) से भी ज़्यादा करीब रहता है। और उसे उस समय मायूसी का सामना करना पड़ता है जबकि उसे गुमान भी नहीं होता।

लिहाज़ा व्यापार के नियिमों में से यह भी है कि अल्लाह के साथ और लोगों के साथ हमेशा सच्चाई और ईमानदारी से काम लिया जाए इस तरह की धोखाधड़ी और विश्वासघात न किया जाए और न ही सोदे को बढ़ावा देने के लिए गलत तरीकों का इस्तेमाल किया जाए।

याद रखें कि सच्चाई के लिए ईमानदारी ऐसे ही है जैसे कि बदन के लिए आत्मा। लिहाज़ा न तो सच्चाई के बगैर ईमानदारी पाई जा सकती है और न ही ईमानदारी के बिना सच्चाई पाई जा सकती है।

सोदा बेचते समय ज़्यादा कसमें न खाया करो।

और व्यापार जैसा कि हमें मालूम है दो धारी तलवार है। या तो व्यापारी बेचते और खरीदते समय सच बोले, जहाँ तक हो सके न्याय से काम ले और हर सूरत में ईमानदारी का ख्याल रखे। और इस तरह से दुनिया और आखरित दोनों में महान कामयाबी हासलि करे। या फरि धोखाधड़ी और वशि्वासघात करे और छोटी-बड़ी चीज पर बहुत ज्यादा कसमें खाए और दुनिया और आखरित दोनों में बड़ा नुकसान उठाए।

ए मेरे प्यारे भाई! याद रखो कि व्यापार दो तरह का है: एक अल्लाह के साथ और दूसरा लोगों के साथ। लहिाज़ा दूसरे के चक्कर में पढ़कर पहले को भूल मत जाना। बल्कि उन लोगों में से हो जाओ जो जन्हिें दुनिया का व्यापार और उसका धन आखरित के व्यापार और उसके धन से अंजान नहीं करता है।

उसे शहद
पिलाओ।



Rasoulallah.net
LiseOnSunnah Rasoulallah RasoulAllahnet RasuseoulAllah_net

उसे शहद पिलाओ।

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَخِي يَشْتَكِي بَطْنَهُ، فَقَالَ: "اسْقِهِ عَسَلًا"، ثُمَّ أَتَى الثَّانِيَةَ فَقَالَ: "اسْقِهِ عَسَلًا" ثُمَّ أَتَاهُ الثَّالِثَةَ فَقَالَ: "اسْقِهِ عَسَلًا"، ثُمَّ أَتَاهُ فَقَالَ: قَدْ فَعَلْتُ، فَقَالَ: "صَدَقَ اللَّهُ وَكَذَبَ بَطْنُ أَخِيكَ، اسْقِهِ عَسَلًا، فَسَقَاهُ فَبَرَأَ"

तर्जुमा: हज़रत अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक व्यक्ति नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा कि मेरे भाई का पेट खराब हो गया है।



उसे शहद पिलाओ।

तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उससे फरमाया कि उन्हें शहद पिलाओ। फिर वही व्यक्ति दूसरी बार आया। नबी ए करीम सल्लल्लाहु वसल्लम ने उससे इस बार भी शहद पिलाने के लिए कहा। वह फिर तीसरी बार आए और बोले कि आपके आदेश के मुताबिक मैंने काम किया। (लेकिन मेरा भाई ठीक नहीं हुआ।) तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह सच्चा है (कि शहद में इलाज है) और तुम्हारे भाई का पेट झूठा है। उन्हें फिर शहद पिलाओ। तथा उन्होंने अपने भाई को फिर शहद पिलाया तो वह उससे ठीक हो गए।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने सह़ाबा ए किराम रद़ियल्लाहु अ़न्हुम इकराम के बीच आयुर्वज्ञिान (डाक्टरी या बीमारी के इलाज का ज्ञान) और हकिमत से मशहूर थे। आप रोग को पहचान लेते और उसकी सही दवा बताते। यह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की एक बसीरत (अन्तर्दृष्टि, परख) थी जो अल्लाह ने खासतौर पर आपको दी थी।



उसे शहद पिलाओ।

लहिाज़ा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास जो भी व्यक्ति किसी शरई मसले या अपने भाई के दुनयिावी फायदे के बारे में पूछने के लिए आता तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसके लिए अपना सीना खोल देते और उसे संतोषजनक जवाब देते जसिसे वह खुश हो जाता और उसे अल्लाह की तरफ से वही (संदेश) समझता। लहिाज़ा जो भी नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसे सलाह देते उसका पालन करता।

मैंने किसी किताब में पढ़ा है कि जिसि व्यक्ति का पेट खराब हो गया हो वह शहद पयि। क्योंकि शहद पीने से दस्त होंगे जसिके द्वारा धीरे-धीरे वे सभी कीटाणु बाहर नकिल जाएंगे जो पेट की खराबी कारण हुए हैं। यहाँ तक कि वह पूरे तौर पर ठीक हो जाएगा।

शहद किसी बीमारी के लिए किसी समय में किसी व्यक्ति के लिए किसी हद तक एक इलाज है। ऐसा नहीं है कि यिह हर समय सभी लोगों के लिए सभी बीमारयिों का इलाज है। जैसा कि इंसानी तबीयत और क़ुरआन और सुन्नत का थोड़ा सा भी ज्ञान रखने वाले सभी लोग इसे जानते हैं।



उसे शहद पिलाओ।

हमें जो दलीलों और अनुभवों से साबति हुआ है वह यह के शहद में बहुत से लोगों और बहुत सी लाइलाज बीमारियों का इलाज है। लेकनि तमाम बीमारियों और सब लोगों के लएि नहीं। बल्कि मामला ऐसे ही है जैसा कि हमने ऊपर बयान कयिा।

इस वसयित से हमें मालूम होता है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इस पर कतिना वशि्वास था कि शहद आमतौर पर पेट की बीमारियों का लाभदायक इलाज है। लेकनि यह बात इसके खलिाफ नहीं है कि शहद के अलावा दूसरी दवाईयाँ न हों और न ही इस बात के खलिाफ है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के समय में मौजूदा बीमारियों के अलावा दूसरी बीमारियाँ न हो जनिका शहद से इलाज नहीं हो सकता। क्योंकि क़ुरआन और सुन्नत में कोई ऐसी दलील मौजूद नहीं है जो सामान्यता (उमूम) को बताती हो।



गुस्सा शैतान से है।

عَنْ أَبِي ذَرٍّ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَنَا: "إِذَا غَضِبَ أَحَدُكُمْ وَهُوَ قَائِمٌ فَلْيَجْلِسْ، فَإِنْ ذَهَبَ عَنْهُ الْغَضَبُ وَإِلَّا فَلْيَضْطَجِعْ

तर्जुमा: हज़रत अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "जब तुम में से किसी को गुस्सा आ जाए और वह खड़ा हो तो बैठ जाए। अगर बैठ जाने से गुस्सा खत्म हो जाए तब तो ठीक है वरना तो लेट जाए।"



गुस्सा शैतान से है।

وَعَنْ أَبِي وَائِلٍ الْقَاصُّ قَالَ: دَخَلْنَا عَلَى عُرْوَةَ بْنِ مُحَمَّدٍ السَّعْدِيِّ فَكَلَّمَهُ رَجُلٌ فَأَغْضَبَهُ، فَقَامَ فَتَوَضَّأَ، ثُمَّ رَجَعَ وَقَدْ تَوَضَّأَ فَقَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ جَدِّي عَطِيَّةَ، قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ الْغَضَبَ مِنْ الشَّيْطَانِ، وَإِنَّ الشَّيْطَانَ خُلِقَ مِنْ النَّارِ، وَإِنَّمَا تُطْفَأُ النَّارُ بِالْمَاءِ، فَإِذَا غَضِبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَتَوَضَّأْ

तर्जुमा: और हज़रत अबू वाईल क़ास (कहानी सुनाने वाले) बयान करते हैं कि हम अम्र बनि मुहम्मद सअदी के पास गाए। तो एक व्यक्ति ने उनसे कुछ बात कही जसिके कारण उन्हें गुस्सा आ गया तो उस पर उन्होंने वुज़ू कयिा। जब वह वुज़ू करके वापस आए तो बोले मुझसे मेरे पतिा ने मेरे दादा हज़रत अतयिह से उल्लेख हदीस़ बयान की कि उन्होंने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया:"गुस्सा शैतान से है और शैतान आग से पैदा कयिा गया है और आग पानी से बुझाई जाती है। लहिाज़ा जब तुम में से कसिी को गुस्सा आ जाए तो फौरन वुज़ू कर ले।"

गुस्सा एक बहुत बड़ी आफत है जो इंसान की बुद्धि छीन लेता है और उसकी प्रेमपूर्ण भावनाओं को नष्ट करके उसके अंदर दुख और गम भर देता है।



गुस्सा शैतान से है।

गुस्सा (क्रोध) जसि तरह मानसकि और मनोवैज्ञानकि ताकतों को प्रभावति करता है इसी तरह तंत्रकिा शक्तयिों और रक्त वाहकिाओं को भी प्रभावति करता है। जसिसे क्रोधी व्यक्तकि के इन अंगों में बैचेनी पैदा हो जाती है, ब्लड प्रेशर हाई हो जाता है और दलि की धड़कने बढ़ जाती हैं।

लहिाज़ा मुसलमान -बल्कि हर इंसान- को चाहएि कि वह जहाँ तक हो सके हमेशा गुस्से के कारणों और उसकी जगहों से बचे।

ज़्यादातर बीमारयिाँ जो इंसान को लगती हैं वह गुस्से की वजह से होती हैं जैसा के डॉक्टर्स कहते हैं।

ए मेरे प्यारे मुसलमान भाई! ईमान और हम्मित और हौसले के एतवार से ताकतवर मोमनि वही है जो गुस्से के समय अपने आप को काबू में रखे, बखिरने से पहले अपने आपको संभाल ले और खामोशी और इत्मीनान व सुकून के साथ सामने वाले का सामना करने से अपने आप को पीछे हटा ले ताकि उसकी बुराई से भी महफूज रहे और अपने गुस्से की आफत से भी जसिने उसे पागल कर दयिा है।

गुस्से का एक इलाज यह भी है कि शैतान से अल्लाह की पनाह (यानी शरण) मांगे। क्योंकि जो अल्लाह की पनाह मांगता है अल्लाह उसे अपनी पनाह में ले लेता है और जसि चीज से पनाह मांग रहा है उससे उसकी हफिाजत फरमाता है।



अपने आप को बद्दुआ (शाप) न दो।

عَنْ جَابِرٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا تَدْعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ وَلَا تَدْعُوا عَلَى أَوْلَادِكُمْ، وَلَا تَدْعُوا عَلَى أَمْوَالِكُمْ، لَا تُوَافِقُوا مِنْ اللَّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى سَاعَةَ يُسْأَلُ فِيهَا عَطَاءٌ فَيَسْتَجِيبَ لَكُمْ"

तरजुमा: ह़ज़रत जाबरि रद़यिल्लाहु अ़नहु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:" अपने आप को बद्दुआ (शाप) न दो। अपनी औलाद को बद्दुआ न दो। अपने खादमिों (नौकरों) को बद्दुआ न दो। और न ही अपने धन को बद्दुआ दो। क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि वह अल्लाह की तरफ से कबूलयित की घड़ी हो तो तुम्हारी बद्दुआ़ कबूल हो जाए।"



अपने आप को बद्दुआ (शाप) न दो।

इंसान फतिरती तौर पर जल्दबाज़, अक्सर नाशुक्रा (कृतघ्न) और बहुत बड़ा झगड़ालू है यहाँ तक कि खुद के साथ भी। कभी-कभी मामूली सी बात पर बहुत ज्यादा गुस्सा कर बैठता है और गुस्सा दलिाने वाले व्यक्ति पर भड़क जाता है यहाँ तक कि वह उसकी सारी भलाईयों को भुला देता है। उसका कुछ भी सम्मान नहीं करता है बल्कि उसे गालयिाँ देता है और उसको तबाही और बर्बादी की बद्दुआएं देता है। और कभी-कभार तो उस पर इतना गुस्सा सवार हो जाता है कि अपने आप को ही ऐसी ऐसी बद्दुआएं देता है कि होश में आ जाए तो बड़ा शर्मदिा हो।

गुस्सा इंसान की बुद्धि छीन लेता है। उसके होश व हवास खो देता है और उसे पूरे तौर पर अपने बस में करके उसे कठपुतली बना देता है। फरि तो वह ऐसे ऐसे काम करता है कि अपने आपको तबाही और बर्बादी के गडडे में डाल देता है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमसे अपनी बहुत ज्यादा मोहब्बत और प्यार की वजह से इरशाद फरमा रहे हैं कि अपने आपको बद्दुआ़ न दो। यानी गुस्सा या मायूसी या तकलीफों से परेशान हो कर कभी अपने लएि बुराई या बर्बादी की न दुआ़ करो। क्योंकि एक सच्चा मोमनि अपने नफ्स को अपने नफ्स से ही मारता है।

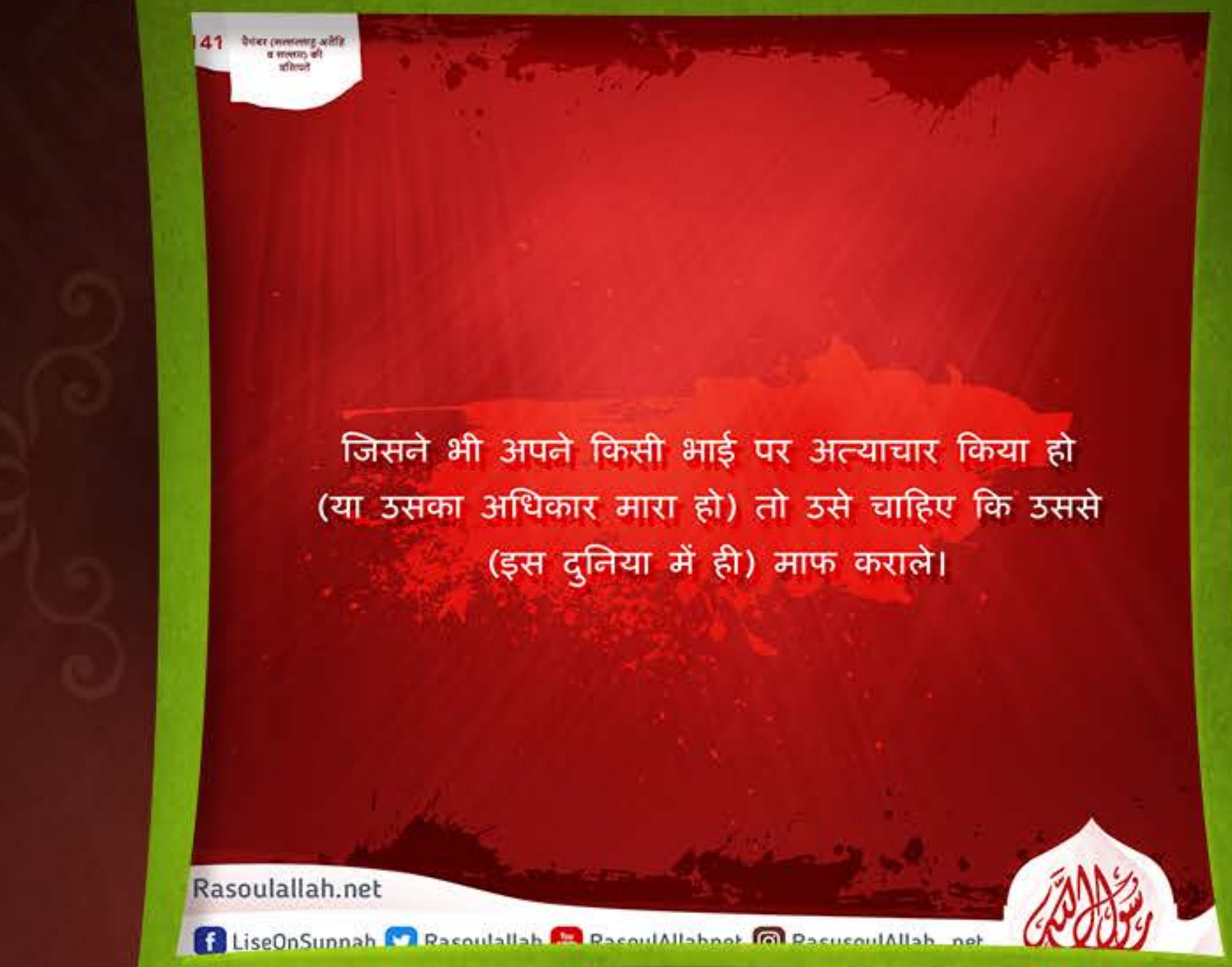


अपने आप को बद्दुआ (शाप) न दो।

ऐसे नफ्स से जो हम्मिमत और हौसले और अल्लाह पर भरोसे से भरपूर होता है। और अपने ऐसे ही नफ्स के द्वारा अपने नफ्स का उन आफतों से इलाज करता है जो ईमान की साफ़-सुथराई और वश्विास की चमक को गंदा कर देती हैं।

कोई भी अकलमंद व्यक्ति कभी अपने आप या अपनी औलाद को बद्दुआ न देगा भले ही वे कतिने ही बुरे हालात में फंसा हो। भले ही उसे कतिना ही ऐसा लगता हो कि गुस्सा केवल ऐसा करने से ही खत्म होगा।

तथा इस ह़दीस़ शरीफ से यह भी सबक मलिता है कि बंदे को चाहएि कि वह हमेशा अपने अल्लाह की बारगाह में अदब और एह्तराम से पेश आए। लहिाज़ा वह उससे ऐसी चीज न मांगे जसिे वह अपनी सलामती के समय अपने लएि या अपनी औलाद या अपने धन के लएि पसंद नहीं करता हो। लहिाज़ा अगर वह अपने आप को या अपने बच्चों को या अपने धन को बद्दुआ़ दे तो यह एक तरह से अल्लाह की बारगाह में बेअदबी से पेश आना है जसिमें बहुत ही बड़ा गुनाह है जसिका आप अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते। क्योंकि इस संसार को पैदा करने वाले, सर्वशक्तमिान, अकेले पूजा के योग्य अल्लाह की बारगाह में बेअदबी से बढ़कर कोई गुनाह नहीं हो सकता।



जिसने भी अपने किसी भाई पर अत्याचार किया हो (या उसका अधिकार मारा हो) तो उसे चाहिए कि उससे (इस दुनिया में ही) माफ करा ले।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولَ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ كَانَتْ عِنْدَهُ مَظْلَمَةٌ لِأَخِيهِ فَلْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهَا؛ فَإِنَّهُ لَيْسَ ثَمَّ دِينَارٌ وَلَا دِرْهَمٌ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُؤْخَذَ لِأَخِيهِ مِنْ حَسَنَاتِه، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ أُخِذَ مِنْ سَيِّئَاتِ أَخِيهِ فَطُرِحَتْ عَلَيْهِ

तर्जुमा: हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"जिसने भी अपने किसी भाई पर अत्याचार किया हो (या उसका अधिकार मारा हो) तो उसे चाहिए कि उससे (इस दुनिया में ही) माफ करा ले। इसलिए कि आखिरत में रूपए-पैसे नहीं होंगे।



जिसने भी अपने किसी भाई पर अत्याचार किया हो (या उसका अधिकार मारा हो) तो उसे चाहिए कि उससे (इस दुनिया में ही) माफ करा ले।

इससे पहले (माफ करा ले) कि उसके मज़लूम भाई को उसकी नेकियों में से अधकिार दलिाया जाए और अगर उसके पास नेकियाँ न होंगी तो उस (मज़लूम) भाई की बुराइयाँ उस पर डाल दी जाएंगी।"

ऐसा लगता है कि दुनयिा को रुखसत कहने वाले व्यक्ति की यह वसयित है जो अपने अंदर बड़ी महत्वपूर्ण और ऐसी चीजें लएि हुए है जनिका ख्याल रखना बहुत जरूरी है। लेकनि इंसान अल्लाह से दूरी, दुनयिा से बहुत ज्यादा लगाओ, अपनी ख्वाहशि और स्वार्थ की वजह से उन्हें भूल जाता है या फरि भुला देता है। उन्हीं चीजों में से एक मोमनिो के दरमयिान सच्चा भाईचारा और उससे संबंधति अधकिार हैं जनिको अदा करना जरूरी है। तथा उससे संबंध कुछ आदाब भी हैं जनिका ख्याल करना और जनिकी सुरक्षा करना जरूरी है।

उन्हीं चीजों में से मुसलमान और गैर मुसलमान सभी लोगों के बीच न्याय को स्थापति करना, उन नयिमों को पहचानना जनि पर वह आधारति है और बेहतर तरीके से उसको लागू करना भी है ताकि इस धरती पर बसने वाले सभी लोगों के बीच अमन और शांति कायम रहे।



जिसने भी अपने किसी भाई पर अत्याचार किया हो (या उसका अधिकार मारा हो) तो उसे चाहिए कि उससे (इस दुनिया में ही) माफ कराले।

उन्हीं चीजों में से यह भी है कि जब कोई व्यक्ति अपने भाई के हक में कोई गलती कर दे तो उसके लिए जरूरी है कि वह उससे माफी मांगे और जहाँ तक हो सके भलाई से उसका बदला दे। और अगर यह नहीं कर सकता तो सम्मान और अदब व एहतराम के साथ माफी ही मांग ले।

ज़ुल्म अरबी भाषा का शब्द है। इसके के माना है कसिी चीज को उसके अलावा की जगह में रखना। और यही माना रोकने यह कमी करने का है। ज़ुल्म (अत्याचार या अंधेरा) को ज़ुल्म इसलिए कहा जाता है कि वह अंधेरे की तरह होता है। क्योंकि हक़ीक़त को छुपाया जाता है और अधकिारों को नष्ट कयिा जाता है। ह़दीस़ शरीफ में " मज़लमिह" का शब्द आया है जो कि अरबी भाषा का शब्द है। इसके माना हैं अत्याचार।और अत्याचार दो तरह का होता है:

एक भौतकि अत्याचार: यह पैसों या सामान वगैरह नजिी चीज़ों में होता है।

दूसरा आध्यात्मकि अत्याचार: यह इज्जत व आबरू, सम्मान और उन आदतों में होता है जनिमें हर कसिी को सम्मान और आज़ादी (स्वतंत्रता) के मामले में उसका अधकिार देना लाजमी होता है। और उन जैसे अन्य अधकिारों में जनि को खरीदा नहीं जा सकता बल्कि उनको अदा करना जरूरी है।



अल्लाह के ज़िक्र के अलावा बहुत ज़्यादा बोलने से बचो।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولَ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ كَانَتْ عِنْدَهُ مَظْلَمَةٌ لِأَخِيهِ فَلْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهَا؛ فَإِنَّهُ لَيْسَ ثَمَّ دِينَارٌ وَلَا دِرْهَمٌ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُؤْخَذَ لِأَخِيهِ مِنْ حَسَنَاتِه، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ أُخِذَ مِنْ سَيِّئَاتِ أَخِيهِ فَطُرِحَتْ عَلَيْهِ

तर्जुमा: हज़रत अ़ब्दुल्लह बनि उ़मर रद़यिल्लाहु अ़न्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "अल्लाह के ज़िक्र के अलावा बहुत ज़्यादा बोलने से बचो। क्योंकि अल्लाह के ज़िक्र के अलावा ज़्यादा बात करना दिल को सख़्त (कठोर) कर देता है। और बेशक अल्लाह से सबसे दूर कठोर दिल वाला होता है।"



अल्लाह के ज़िक्र के अलावा बहुत ज़्यादा बोलने से बचो।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमें इस ह़दीस़ शरीफ में इस बात की नसीहत फरमा रहे हैं कि हम ऐसी बात न करें जसिमें अल्लाह का ज़क्रि न हो और अगर करें भी तो ज्यादा न करें बल्कि सरि्फ इतनी करें जसिसे मकसद पूरा हो जाए। लहिाज़ा सबसे बेहतर बात वह है जसिमें शब्द कम और माना ज़्यादा हों। तथा अक्लमंदी भी कम बोलने में ही है। नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अल्लाह के ज़क्रि के अलावा ज़्यादा बोलने से मनादी की वजह यह बताई कि इससे दलि सख्त होता है।

यानी बनिा वजह की बात करने से तबीयत में सख्ती (कठोरता), अखलाक में बुराई और दलि में अंधेरा होता है। और जब दलि में अंधेरा हो जाता है तो वह कठोर (सख्त) हो जाता है और जब दलि कठोर हो जाता है तो वह अपना संतुलन खो बैठता है और नष्ट हो जाता है। ऐसी स्थतिि में ऐसे दलि वाला इंसान अल्लाह से सबसे ज़्यादा दूर हो जाता है जसि से बढ़कर कोई बुराई नहीं हो सकती।



अल्लाह के ज़िक्र के अलावा बहुत ज़्यादा बोलने से बचो।

नेक लोगों की बातचीत अल्लाह का ज़िक्र हुआ करती है। क्योंकि उसमें बिना वजह की बात नहीं होती है जो नुकसान पहुंचाती है और किसी तरह का फायदा नहीं देती। बल्कि वे लोग तो बिना वजह की बात करने से सबसे ज़्यादा दूर रहते हैं। क्योंकि वह हमेशा अपने आप को ठीक काम और सही बात में व्यस्त रखते हैं। क्योंकि अगर आप अपने आप को ठीक काम और सही बात में व्यस्त नहीं रखेंगे तो आप गलत काम में पड़ जाएंगे। एक सहीह हदीस पाक में आया है कि: "अल्लाह उस व्यक्ति पर रहम (दया या कृपा) फरमाए जो बोले तो फायदे में रहे या चुप रहे तो बचा रहे।" और एक कहावत भी है कि जो ज़्यादा बोलता है वह गलती भी ज़्यादा करता है।



सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوبِقَاتِ" قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ! وَمَا هُنَّ، قَالَ: " الشِّرْكُ بِاللَّهِ وَالسِّحْرُ وَقَتْلُ النَّفْسِ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَكْلُ الرِّبَا وَأَكْلُ مَالِ الْيَتِيمِ وَالتَّوَلِّي يَوْمَ الزَّحْفِ وَقَذْفُ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ الْغَافِلَاتِ

तर्जुमा: हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अनहु बयान करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।" सहाबा ए करिम ने पूछा:" ए अल्लाह के रसूल! वे गुनाह क्या हैं?"नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:



सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

:"अल्लाह के साथ कसिी को साझेदार करना (अल्लाह के साथ शर्कि करना), जादू-टोना करना, कसिी को नाहक क़त्ल करना कि जसिसे अल्लाह ने मना क्या है, सूद खाना, यतीम (अनाथ) का माल खाना,युद्ध से भाग जाना और पवत्रि व भोली-भाली मुसलमान महलिाओं पर (गुनाह की) तोहमत लगाना।"

यह वसयित लगभग हर उस बुराई को शामलि है जसिसे रुकना चाहएि और जसिके करीब नहीं जाना चाहएि। अल्लाह के साथ शर्कि करना सबसे बड़ा गुनाह है और तमाम बुराइयों को शामलि है बल्कि वह बुराई पर बुराई है। फरि इसके बाद जक्रि होने वाली चीजों की बुराई का नंबर आता है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की यह महान आदत थी कि आप अपने भाषण में कुछ भलाईयों का जक्रि करते जनिके करने का हुक्म देते और कुछ बुराइयों का ज़क्रि करते जनिसे बचने का आदेश देते जैसे कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फरमाते हैं:

سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمْ اللَّهُ فِي ظِلِّهِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ...".

तर्जुमा: सात लोगों को अल्लाह उस दनि अपनी कृपा की छांव में रखेगा जसि दनि सविाय उसकी कृपा की छांव के कोई ओर छांव न होगी।"



सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

एक दुसरी जगह नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

أَرْبَعٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ كَانَ مُنَافِقًا خَالِصًا

तर्जुमा:"जसिमें चार आदतें हों वह पक्का मुनाफकि (दो रुखा) है।"

और यहाँ पर इरशाद फ़रमाते हैं: "सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।" तबाह करने वाले केवल सात ही गुनाह नहीं हैं लेकनि यहाँ पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सात ही का जक्रि फरमाया ताकि ये आसानी के साथ याद हो जाएं।

इस वसयित पर पहली नजर पड़ते ही यह पता चल जाता है कि शर्रिक के बाद जो चीजें बयान हुई हैं उनमें गुनाह की तरतीब का ख़्याल नहीं रखा गया है उदाहरण के लिए जब शर्रिक के बाद जक्रि होने वाले गुनाह पर नजर करेंगे तो आपको लगेगा कि यह बाद में आने वाला गुनाह से ज़्यादा बड़ा गुनाह है लेकनि जब उसके बाद वाले को देखेंगे तो आप कहेंगे कि यह पहले वाले से बड़ा गुनाह है। और इसी तरह बाकी गुनाहों में भी यही बात है। और सच यह है कि इन गुनाहों में से हर एक अलग अलग एतबार से अपने सामने वाले गुनाह से बड़ा गुनाह है लेकनि इकट्ठा तौर पर शर्रिक के बाद सभी एक जैसे गुनाह और बुराई हैं।



सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फरमान: "बचो।" का मतलब यह है कि पूरी सावधानी रखो। और दुनयिा और आखरित में तबाह और बर्बाद कर देने वाले गुनाहों से अपने आप को दूर रखो। क्योंकि जैसा कि हमें मालूम है दुनयिा में भी अ़ज़ाब होता है और आखरित में भी होगा। और आखरित का अ़ज़ाब ही बड़ा है।

सर्वशक्तमिान अल्लाह पाक के साथ कसिी को शरीक करना यानी साझेदार ठहराना बहुत ही बड़ी आफत और बहुत बड़ा गुनाह है जो कभी माफ नहीं कयिा जाएगा। अल्लाह ऐसे कसिी भी पुरुष या महलिा का कोई कार्य कुबूल नहीं करेगा। क्योंकि कार्य के सही होने और उसके कुबूल होने के लिए शुद्ध ईमान का होना जरूरी है।

इस वसयित में दूसरा हलाक कर देने वाला गुनाह जसिसे से बचने का नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आदेश दयिा है जादू-टोना करना है। यह भले ही कुफ्र नहीं है लेकनि उससे कम भी नहीं है। जादूगरों को आखरित में अल्लाह की कृपा नसीब नहीं होगी बल्कि उन्हें तो उनके फसाद की वजह से अ़ज़ाब (सज़ा) पर अ़ज़ाब दयिा जाएगा। फरिऔन की कॉम एक प्रकार का जादू जानती थी जसि बाबूली नहीं जानते थे। तो अल्लाह ने अपने नबी ह़ज़रत मूसा को ऐसा चमत्कार व करश्मिा दयिा जसिके द्वारा उन्होंने फरिऔन की कॉम की साज़शिों और चालों को मट्टिी में मलिा दयिा।



सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

जादूगर का हुक्म यह है कि अगर लोगों को इससे परेशानी पहुंचे तो उससे तौबा करने को कहा जाए। अगर तौबा कर ले और अपनी मक्कारी से बाज आ जाए तो उसे अल्लाह के फैसले पर छोड़ दिया जाए। और अल्लाह ही बेहतरीन फैसला करने वाला है। और अगर तौबा न करे तो उसे क़त्ल कर दिया जाए। मुसलमान को चाहिए कि वह तमाम जादूगरों से दूर है। और उनसे कोई संबंध न रखे। और न ही उन लोगों के पास जाए जो यह दावा करते हैं कि उनका जिन्नों से संपर्क है। वे उन्हें अप्रकट (गुप्त, अनदेखी) चीजें बताते हैं। उनाका काम करते हैं। जो वे उनसे मांगें उसे पूरा करते हैं। गायब (अनुपस्थिति) व्यक्ति को सामने ला देते हैं। वगेरह वगेरह झूठे दावे करते हैं।

\

और न ही फाल निकालने वाले के पास जाए जो सितारों को देखकर कंकरियों वगैरह से फाल खोलता है जिसे कोई सही बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती।

तीसरा हलाक कर देने वाला गुनाह किसी को नाहक क़त्ल करना है। यह उन तमाम गुनाहों से बुरा गुनाह है जो एक इंसान अपने इंसान ही भाई के हक में करता है। तो कौन सी जमीन उसे स्वीकार करेगी करेगी और कौन सा आसमान उसे छांव देगा जो बिना जमीर के अपने इंसान भाई को नाहक क़त्ल कर देता है। क़ाबिल और हाबिल की कहानी में अल्लाह ने क़त्ल को बहुत बढ़ा जुर्म व पाप बताया है। अतः इस कहानी के आखिर में अल्लाह फरमाता है:



सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا

(सूरह: अल-माइदह, आयत संख्या: 32)

तर्जुमा: इस वजह से हमने बनी इस्राइल पर लिखि दिया कि जिसिने बगैर जान के बदले कोई जान क़त्ल की या जमीन में फसाद किए तो गोया उसने सब लोगों को क़त्ल किया। और जसिने एक जान को जलिा लिया उसने गोया सब लोगों को जला लिया।" (तर्जुमा: कंज़ुलईमान)

अत:एक जान के क़त्ल करने को सब लोगों का क़त्ल करना बताया गया ताकि यिह पता चल सके कि नाहक़ क़त्ल करना कतिना बड़ा जुर्म व पाप है।

नाहक क़त्ल करने का सबसे गंभीर रूप यह है कि कोई व्यक्ति फकीरी के डर से अपनी औलाद या शर्म की वजह से अपनी बेटी को कत्ल करदे जैसा कि जाहलिी जमाने में अरब के कुछ लोग किया करते थे। और उससे भी बड़ा जुर्म यह है कि अल्लाह की तक़दीर (भाग्य) से तंग व परेशान और उसकी कृपा या रहमत से मायूस होकर इंसान खुदकुशी करले।



सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

चौथा हलाक करने वाला गुना सूद खाना है। यह इंसान को दुनयिा और आखरित में तबाह करने वाला सबसे बड़ा गुनाह है। अल्लाह ने सूद खाने वालों की कयामत के दनि की स्थतिि बयान की है जसिसे दलि दहल जाते हैं। अल्लाह फरमाता है:

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ.

(सूरह: अल-बक़रह, आयत संख्या:275)

तर्जुमा: "वे जो सूद खाते हैं कयामत के दनि न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वह जसिे आसैब ने छूकर पागल कर दयिा हो।" (तर्जुमा: कंज़ुलईमान)

लहिाजा बहुत ज़्यादा डर और होलनाकी के कारण वे अपनी क़बरों से पागलों की तरह उठेंगे और उनके पेट उनके आगे होंगे जैसे उहद का पहाड़ जैसे कि कुछ ह़दीसों आया है।

सूदखोर मूर्ख इंसान है। क्योंकि वह समझता है कि सूद लेने में बहुत ज़्यादा फायदा है कि वह अपना माल कसिी को इस शर्त पर कर्ज देता है कि वह उससे ज़्यादा उसे वापस देगा हालांकि हकीकत में यह बहुत बड़ा नुकसान और घटा है। क्योंकि किसी न कसिी तरह वह हराम का माल चला ही जाता है और अगर बाकी रहे तो न उसे फायदा देता है और न ही उसके मरने के बाद उसके वारसिों को।



सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

अगर यह व्यक्ति अकलमंद होता तो जरूर यह जान लेता की भलाई (बिना सूद के) अच्छा कर्ज देने में ही है। क्योंकि वह यह एक ऐसा महान सदक़ा है जिससे अल्लाह की नाराजगी दूर होती है और जिससे उस व्यक्ति को दुनिया और आखिरि में फायदा पहुंचता है। लेकिन सूद के साथ क़र्ज़ देने में ऐसा नहीं है। क्योंकि उसमें सिर्फ नुकसान ही नुकसान है।

सूद का लेनदेन करना एक तो बहुत बड़ा गुनाह है जैसा कि हमने ऊपर बयान किया। तथा इसमें माल की बर्बादी भी है जिसे पैदावार बढ़ाने और मजदूरों को देने में इस्तेमाल करना चाहिए जिसमें की बहुत बड़ा फायदा है।

पांचवाँ तबाह कर देने वाला गुनाह अनाथ का माल खाना है। इसमें भी सूद खाने से कम गुनाह नहीं है बल्कि ये तो उससे भी बड़ा गुनाह है। क्योंकि अल्लाह ने इस पर सख्त चेतावनी दी है। अल्लाह फरमाता है:

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا

(सूरह: अल-निसाअ, आयत संख्या: 10)

तर्जुमा: "वह जो यह अनाथों का माल नाहक खाते हैं वह तो अपने पेटों में निरी आग भरते हैं और कोई दम जाता है कि वे भड़कती आग में झुलसाए जाएंगे।"

तो पता चला कि अनाथ का माल एक आग है जो भी उसकी तरफ खयानत का हाथ बढ़ाता है उसे जलाकर रख देता है या जमीन में धंसा देता है। लहिाजा जो उसे नाहक खाएगा दुनयिा में भी चलेगा और आखरित में भी जहन्नम की आग में झुलसाया जाएगा। और ताकि कोई इसका खबीस गुनाह को करने की कोशशि न करे इसलएि अल्लाह ने इस चेतावनी से पहले एक ओर चेतावनी दी। अतः अल्लाह ने ऊपर बयान की हुई आयत से पहले फरमाया:

وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَافًا خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا

(सूरह: अल-नसिाअ, आयत संख्या: 9)

तर्जुमा: "और डरें वे लोग अपने बाद कमजोर औलाद छोड़ते तो उनका कैसा उन्हें खतरा होता। तो चाहएि कि अल्लाह से डरें और सीधी बात करें।" (तर्जुमा: कंज़ुलईमान) तो चाहएि कि वे अल्लाह के अधकिार का ख्याल रखें। अपने मातहत अनाथों के अधकिार में अल्लाह से डरें, उनकी और उनकी सम्पत्ति की सुरक्षा करें और उनके साथ ऐसा व्यवहार करें जैसा कि वे अपने बच्चों के साथ चाहते हैं।

अनाथों का माल खाने से सबसे ज़्यादा अल्लाह से डरने वाले सह़ाबा ए करिम रद़यिल्लाहु अ़न्हुम थे खासकर उनका नाहक माल खाने के बारे में आयत उतरने के बाद।



सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

यतीम के साथ सबसे बेहतरीन भलाई और नेकी यह है कि उसकी अच्छी तरह से देखभाल की जाए यहाँ तक कि अच्छी तरह से उसमें अपने मामले संभालने की क्षमता हो जाए। यही अमानत अल्लाह ने अनाथों के जिम्मेदारों के कंधों पर रखी है। लिहाज़ा अगर इसमें कोताही करेंगे तो उसी के हिसाब से उन्हें अल्लाह के सामने उसका जवाब देना होगा।

छटा हलाक कर देने वाला गुनाह मैदान-ए-जंग (युद्ध के मैदान) से भाग जाना है। यह एक बड़ा गुनाह है जबकि इससे मुसलमानों के समूह से जा मिलकर सहायता मांगना या पीछे हटकर दुश्मन को फांसना और उसको हराना मकसूद न हो।

युद्ध के मैदान में डटे रहना एक बड़ी जिम्मेदारी है और यह मोमिन के लिए एक सम्मान और अल्लाह के साथ उसके सच होने के सबूत है। जबकि युद्ध का मैदान छोड़कर भाग जाने में बुजदिली, जिल्लत व रुसवाई, मुसलमानों को तकलीफ देना और उनके साथ विश्वासघात करना है। क्योंकि इससे उनमें फूट पड़ेगी, उनकी हिम्मत टूटेगी और दुश्मन को डटे रह जाने वाले मुसलमानों पर हमला करने की हिम्मत मिलेगी।

सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

लेकिन अक्सर ऐसा होता है कि भागने वालों पर ही भागने का बवाल आ गरिता है। और कभी-कभार तो इसकी वजह से वह बड़ी बुरी तरह मारे जाते हैं। और बुजदलिों की मौत मरते हैं जनिका दुनयिा में कोई चर्चा नहीं रहता। और आखरित में भी उन्हें लानत और जहन्नुम के अ़ज़ाब के अलावा कुछ नहीं मलिने वाला। युद्ध के मैदान में सबसे ज्यादा डटे रहकर लड़ने वाले नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वाले के सह़ाबा ए करिम रद़यिल्लाहु अ़न्हुम थे। शहादत पाना उनकी आरजू और बड़ी सफलता थी। क्योंकि वह शहादत के सम्मान और मर्तबा और उसके सवाब को अच्छी तरह जानते थे। उनका नारा था कि मौत की आरजू करो ताकि ताकि तुम्हें हमेशा का जीवन नसीब हो।

सातवाँ तबाह कर देने वाला गुना पवत्रि महलिाओं पर तोहमत लगाना है। यह भी बहुत बड़ा और खतरनाक जुर्म है। और इस्लामी समाज जो कि अच्छे अखलाक और बेहतरीन व्यवहार में दुसरे सभी समाजों में अलग हैसयित रखता है उसके लएि यह गुनाह सबसे ज्यादा नुकसान दे और हानकिारक है। क़ुरआन पाक में पवत्रि महलिाओं पर तोहमत लगाने के बारे में अल्लाह का फरमान है:

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

(सूरह: नूर, आयत संख्या: 23)



सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

तर्जुमा: "बेशक वे जो एब लगाते हैं अनजान पवत्रि ईमान वालयिों को उन पर लानत है दुनयिा और आखरित में। और उनके लएि बड़ा अ़ज़ाब है।" (तर्जुमा: कंज़ुलईमान)

पवत्रि औरतें यानी साफ-सुथरी महलिाएं। एब लगाने का मतलब उन पर बदकारी व ज़निा की तोहमत लगाना है जबकि वे उससे बरी और कोसों दूर हों। तोहमत लगाने वाले लोगों पर लानत होने का मतलब है कि दुनयिा और आखरित में वे अल्लाह की रहमत से दूर रहेंगे। लहिाजा इसमें उन लोगों के लएि सबक है जो लोगों की इज्जत से खलिवाड़ करते हैं। और मुस्लमि समाज में बुराई फैलाना पसंद करते हैं।

पवत्रि पुरुषों पर तोहमत लगाना भी पवत्रि महलिाओं पर तोहमत लगाने ही की तरह है। लेकनि इस ह़दीस़ शरीफ में खासतौर पर पवति औरतों पर तोहमत लगाने के बारे में आया है। उसकी वजह यह है कि पुरुषों के प्रति महलिाओं पर ज्यादा तोहमत लगाई जाती है। और यह ज्यादा नुकसान दे और हानकिारक है। तथा इसका ज्यादा बुरा अंजाम है। क्योंकि औरतों के बारे में जो कहा जाता है उससे उसे भी तकलीफ होती है, उसके पति, बच्चों और परविार वालों को भी तकलीफ होती है। लेकनि मर्द का मामला ऐसा नहीं है जैसा कि यह जाहरि है इसके बताने की जरूरत नहीं। ज़निा (बदकारी) की तोहमत लगाना गुनाह में ज़निा करने की तरह है। इसी वजह से उसकी सजा कोड़े लगाना है।



सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

इस महान वसयित ने हमें भलाई और हदायत का रास्ता दखिाया, बुराइयों के स्थानों को बताया तथा मुख़्तसर तौर पर सभी बुरी वशिषताओं से खबर दार कर दयिा। क्योंकि यह सात तबाह करने वाली आफतें साभी बड़े गुनाहों और बुरी आदतों की जड़ हैं। लहिाज़ा जो इन से सुरक्षति रहेगा वह उन सभी आफतों से सुरक्षति रहेगा जो दलिों को बूरा कर देती हैं, उन की चमक खत्म कर देती हैं, अच्छे अखलाक और बेहतरीन व्यवहारों का खात्मा कर देती हैं और नेक कामों को तबाह व बर्बाद कर देती हैं।



अल्लाह ने मुझे वह़ी फरमाई (संदेश भेजा) कि तुम लोग इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) अपनाओ।

عَنْ عِيَاضِ بْنِ حِمَارٍ- رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنَّ اللَّهَ أَوْحَى إِلَيَّ أَنْ تَوَاضَعُوا حَتَّى لَا يَبْغِيَ أَحَدٌ عَلَى أَحَدٍ وَلَا يَفْخَرَ أَحَدٌ عَلَى أَحَدٍ

तर्जुमा: ह़ज़रत इ़याज़ बनि ह़मिार रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"अल्लाह ने मुझे वह़ी फरमाई (संदेश भेजा) कि तुम लोग इनकसिारी (खाकसारी, वनिम्रता, वनियशीलता) अपनाओ यहाँ तक कि कोई पर ज़्यादती न करे और न ही कोई कसिी पर घमंड करे।"



अल्लाह ने मुझे वह़ी फरमाई (संदेश भेजा) कि तुम लोग इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) अपनाओ।

यह वसयित सभी प्रकार की भलाईयों को शामलि है। अल्लाह ने अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इसका आदेश दयिा, इसे पूरी तरह उनके दलि में बठिाया, और बहुत से भाषणों और नसीहतों में इसे आपकी ज़ुबान पर जारी कयिा। लहिाज़ा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इसे अपने व्यक्तत्वि और अपनी इबादत में अपनाया, और अपने साथ, लोगों के साथ और अल्लाह के साथ संबंधों की कुंजी बना लयिा। यह उन सभी वसयितों और वशिेषताओं में सबसे महान वसयित व वशिेषता है जन्हिें अल्लाह के प्यारे बंदे अपनाते हैं। अतः इसी से वे अल्लाह की नज़दीकी, उसकी मोहब्बत और उसकी खुशी के बुलंद स्थान पर पहुंचते हैं। क्योंकि इनकसिारी (खाकसारी, वनिम्रता, वनियशीलता) अल्लाह की शुध्द बंदगी का सच्चा अनुवाद है। वह इंसान के अपने आपको पहचानने और अपने अल्लाह के सामने अपनी हैसयित को जानने का पक्का सबूत है।



अल्लाह ने मुझे वह़ी फरमाई (संदेश भेजा) कि तुम लोग इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) अपनाओ।

सच्ची बंदगी इसमें है कि बंदा अपने अल्लाह के सामने खाकसारी (खाकसारी, वनिम्रता, वनियशीलता) बर्ते यहाँ तक कि वह कसिी इबादत व आज्ञाकारति ा (फरमाबरदारी) में अपना कोई गुण न समझे और न ही सवाब का अपने लएि कोई अधकिार समझे। बल्कि उसके दलि में यह रहे कि: ए अल्लाह! आगर तू मुझे सवाब दे तो यह तेरी कृपा है। और अगर सज़ा दे तो यह तेरा न्याय है।

जब कोई बंदा कमाल के दर्जे चढ़ता है तो वह दुनयिा से बलिकुल अलग हो जाता है और जो भी दुनयिा की नेमत उसके पास आती-जाती है उसकी परवाह नहीं करता है। बल्कि उसका मकसद केवल अल्लाह की खुशी हासलि करना होता है।

इस वसयित में इनकसिारी (खाकसारी, वनिम्रता, वनियशीलता) का मतलब लोगों के सामने इनकसिारी करना है। क्योंकि इसके आखरि में नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "यहाँ तक कि कोई पर ज़्यादती न करे और न ही कोई कसिी पर घमंड करे।"



अल्लाह ने मुझे वह़ी फरमाई (संदेश भेजा) कि तुम लोग इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) अपनाओ।

बंदा उस समय तक अल्लाह की एकता को मानने वाला नहीं हो सकता जब तक कि वह उसके साथ इनकसिारी से पेश न आए। क्योंकि यह कैसे हो सकता है कि वह उसके लिए एकता को भी माने और फिर उसके विशेष गुण यानी बुलंदी में उसका साझा भी करे।

याद रहे कि जिसे इनकसिारी (खाकसारी, विनिम्रता, विनियशीलता) की मांग है वह यह है जो किसी तरह के अपमान का कारण न हो, न ही उससे किसी के सम्मान पर हमला हो और न ही उसमें किसी तरह की बनावट हो।

अल्लाह उस समय तक दिलों में प्यार व मोहब्बत पैदा नहीं करता जबतक की लोग आपस में इनकसिारी (खाकसारी, विनिम्रता, विनियशीलता) न करें, जब तक कि हर एक अच्छाई-बुराई और खुशी-गम में अपने ऊपर अपने भाई के अधिकार को न जान ले, जब तक कि लोग एक दूसरे पर अत्याचार, घमंड, और वंश पर गूरूर करना न छोड़ दें, जब तक कि वे अपने दिलों को अल्लाह की मोहब्बत पर इकट्ठा न कर लें और जब तक कि वे उसकी बुलंदी को मानते हुए आपस में इनकसिारी (खाकसारी, विनिम्रता, विनियशीलता) न दिखाएं।



अल्लाह ने मुझे वह़ी फरमाई (संदेश भेजा) कि तुम लोग इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) अपनाओ।

जो अल्लाह की बारगाह में इनकसिारी (खाकसारी, वनिम्रता, वनियशीलता) बरतता है वह प्यारा व बुलंद हो जाता है। और जो लोगों के साथ इनकसिारी (खाकसारी, वनिम्रता, वनियशीलता) बरतता है वह उनके दलिों पर राज करता है। और जो अल्लाह के सामने घमंड करता है तो अल्लाह उसे धंसा देता है और सख्त बदला लेता है। और जो लोगों पर घमंड करता है वह ज़लील व रुसवा और खुजली वाले ऊंट जैसा हो जाता है जसिे अलग-थलग फेंक दयिा जाता है।



दुनिया में इस तरह रहो जैसे कि तुम यात्री (अजनबी) या रास्ता पार करने वाले हो।

عَنْ عَبْدِ اللَّـهِ بْـنِ عُمَـرَ رَضِيَ اللَّـهُ عَنْهُمَا قَـالَ: أَخَـذَ رَسُـولُ اللَّـهِ صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَلَّمَ بِمَنْكِبِي فَقَالَ: "كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيبٌ أَوْ عَابِرُ سَبِيلٍ"
وَكَانَ ابْـنُ عُمَـرَ يَقُـولُ: إِذَا أَمْسَـيْتَ فَـلَا تَنْتَظِـرْ الصَّبَـاحَ، وَإِذَا أَصْبَحْـتَ فَـلَا تَنْتَظِـرْ الْمَسَاءَ، وَخُذْ مِنْ صِحَّتِكَ لِمَرَضِكَ، وَمِنْ حَيَاتِكَ لِمَوْتِكَ.

तर्जुमा: ह़ज़रत अ़ब्दुल्लह बनि उ़मर रद़यिल्लाहु अ़नहुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मेरा कंधा पकड़कर इरशाद फ़रमाया: "दुनयिा में इस तरह रहो जैसे कि तुम यात्री (अजनबी) या रास्ता पार करने वाले हो।"



दुनिया में इस तरह रहो जैसे कि तुम यात्री (अजनबी) या रास्ता पार करने वाले हो।

और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लह बनि उ़मर रद़यिल्लाहु अ़न्हुमा कहा करते थे: "शाम हो जाए तो सुबह का इंतजार मत करो। और सुबह हो जाए तो शाम का इंतजार मत करो। अपनी बीमारी से पहले तंदुरुस्ती में और मौत से पहले ज़न्दिगी में ही नेक काम करलो।"

दुनयिा आखरित की खेती और उसका रास्ता है। अगर मुसलमान उसमें ऐसे ही जदिगी बसर करे तो उसकी दुनयिा बहुत अच्छी रहेगी तथा उसमें उसकी ज़न्दिगी एक नैमत व खुशी की ज़न्दिगी होगी चाहे थोड़ी हो या ज़्यादा। लेकनि जतिनी ज़्यादा होगी उसके लएि उतना ही बेहतर होगा। क्योंकि ह़दीस़ पाक में है: "तुम में सबसे बेहतर वह है जसिकी उम्र लंबी हो और अच्छा काम करे। और तुम में सबसे बुरा वह है जसिकी उम्र लंबी हो लेकनि बुरा काम करे।"

लहिाज़ा सबसे बेहतर वह शख्स है जो इस दुनयिा में रहकर आखरित को अपना मकसद बनाए रखे। मोमनि रहकर अपनी सारी कोशशि उसी में लगाए रखे।दुनयिा में इस तरह जदिगी बसर करे कि उसकी कोई चाहत न रखे बल्कि उसे रास्ता समझे जो उसे जन्नत से नज़दीक और जहन्नम से दूर कर देगा। उसकी नजर में धन ढलती छांव और उधार ली हुई वापस करने वाली चीज और उस पेड़ की तरह हो जसिसे कभी-कभार वह छांव लेता है।



दुनिया में इस तरह रहो जैसे कि तुम यात्री (अजनबी) या रास्ता पार करने वाले हो।

और अपने आपको हमेशा यात्रा में समझे। क्योंकि वह मौत की तरफ जा रहा है और आज या कल मर ही जाएगा। और अकलमंद के लिए कल बहुत करीब और मौत उसके के जूते के तसमे (फीते) से भी ज्यादा नजदीक है।

अकलमंद वह है जो दुनिया की भीड़ भाड़ में मौत को न भूले। क्योंकि मौत की भूल इंसान को अल्लाह के रास्ते से भटका देती है और दुनिया और आखरित में उसकी मंजलि तक पहुंचने में उसके आड़े आ जाती है। दुनिया में अजनबी या यात्री बनकर रहने के दो मतलब हैं:

पहला यह कि वह हमेशा अपने दिमाग में रखे कि वह अपने अल्लाह की तरफ वापस जा रहा है जैसा कि अजनबी या यात्री अपने शहर की तरफ वापस जाता है भले ही दोनों की वापसी में फर्क है। लिहाज़ा वह अपने आप से पूछे कि वह अपने अल्लाह की तरफ क्या लेकर वापस जा रहा है या कैसी हालत में वापस जा रहा है, क्या नेक काम करके वापस जा रहा है जो उसे उसके अल्लाह से नजदीक करेगा और उसके उस दिन अल्लाह के प्यारे बंदो के साथ उठने का कारण बनेगा जिसमें कि अल्लाह नबियों और उन पर ईमान लाने वालों को रुसवा न करेगा या फिर उसके अलावा दूसरी सूरत में वापस जा रहा है जिसकी वजह से उसका ठिकाना भी उस जैसे बुरे और गुनहगारों जैसा होगा।



दुनिया में इस तरह रहो जैसे कि तुम यात्री (अजनबी) या रास्ता पार करने वाले हो।

दुनयिा में अजनबी या यात्री बनकर रहने का दूसरा मतलब यह है कि वह दुनयिा से अलग-थलग रहे। यह इस पर नर्िभर करता है कि यह दुनयिा में देर तक रहने की आरजू न रखे, उसकी ख्वाहशिों से बचें, केवल उतने ही पर संतुष्ट रहे जसिसे वह जदिा रह सके और जो बदन छुपा सके। नेमतों पर बहुत ज्यादा शुक्र अदा करे। नेक कामों में दलि खोलकर माल खर्च करे। और जो दुनयिा और आखरित में फायदेमंद हो बस उसी में अपनी जदिगी लगा दे। क्योंकि हमारा धर्म हमें यह आदेश देता है कि हम जरूरत के हसिाब से बनिा कमी-ज़्यादती के जायज़ तरीकों से इस दुनयिा से अपना हस्सिा हासलि करें।

और सच्चा मोमनि वह है जो इस दुनयिा में उम्मीद और डर के दरमयिान रहते हुए अपनी जदिगी बसर करे, इस दुनयिा की जायज़ चीजों से जरूरत के हसिाब से आनंद ले। अपने आपको उस दनि के लएि तैयार करे जसिमें कोई कसिी को फायदा न देगा। अगर दुनयिा उसे हासलि हो जाए तो उससे धोखा न खाए और उसी में मगन न हो जाए। क्योंकि वह बहुत जल्द ही उसे रुला देगी और उसका बुरा हाल कर देगी।



लोगों को उनके स्थानों (दर्जों) में रखो।

عَنْ مَيْمُونِ بْنِ أَبِي شَبِيبٍ أَنَّ عَائِشَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - مَرَّ بِهَا سَائِلٌ، فَأَعْطَتْهُ كِسْرَةً، وَمَرَّ بِهَا رَجُلٌ عَلَيْهِ ثِيَابٌ وَهَيْئَةٌ فَأَقْعَدَتْهُ فَأَكَلَ، فَقِيلَ لَهَا فِي ذَلِكَ، فَقَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَنْزِلُوا النَّاسَ مَنَازِلَهُمْ

तर्जुमा: ह़ज़रत मैमून बनि अबी शबीब रद़यिल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि ह़ज़रत आएशा रद़यिल्लाहु अन्हा के पास से एक मांगने वाला (भखिारी) गुजरा तो आपने उसे रोटी (वगैरह) का टुकड़ा दयिा। जबकि एक और दूसरा व्यक्ति गुजरा जो की अच्छी सूरत और अच्छे कपड़ो में था।



लोगों को उनके स्थानों (दर्जों) में रखो।

तो ह़ज़रत आ़एशा ने उसे बठिाकर खाना खलिाया। बाद में ह़ज़रत आ़एशा से इस बारे में पूछा गया (कि आपने उन दोनों के साथ अलग अलग व्यवहार क्यों कयिा?) तो ह़ज़रत आ़एशा ने जवाब दयिा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया है:"लोगों को उनके स्थानों (दर्जों) में रखो।"

मुसलमान फतिरती तौर पर बुद्धमिान और दमिागदार होता है। हर चीज को उसकी जगह पर रखता है, हर काम उसके योग्य को देता है, हर हकदार का हक पहचानता है और अपनी हकिमत (परख) से इस तरह काम करता है कि जिसि में हमेशा नरमी व अच्छाई साफ दखिाई देती है। लहिाजा आप देखेंगे कि वह अपने सारे कामों में रवादार होता है। लोगों के साथ व्यवहार करने में बड़ा नरम और दयालु होता है। उनके साथ इनकसिारी (खाकसारी, वनिम्रता, वनियशीलता) से पेश आता है। बड़ों का अदब करता है। और छोटों पर दया करता है। लोगों की कद्र पहचानते हुए उनके साथ उसी हसिाब से व्यवहार करता है। और कसिी की गरीबी व मेहताजी या उसके खराब ढंग या छोटी कॉम की वजह से उसको ह़कीर नहीं समझता है।

लोगों की कद्र (दर्जा) पहचानने और बेहतर तरीके से हर व्यक्ति को उसका हक देने के बारे में यह वसयित एक महान नयिम की हैसयित रखती है।



लोगों को उनके स्थानों (दर्जों) में रखो।

अच्छे सुलूक और बेहतरीन व्यवहार करने में नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आजाद और गुलाम, फकीर और मालदार और कमजोर और ताकतवर के दरमयिान कोई अंतर नहीं करते थे। बल्कि अपनी बैठक और बातचीत में हर एक को बराबर का दर्जा देते थे। अपने मानने वालों में से हर एक छोटे-बड़े पर दया फरमाते थे। यहाँ तक कि ऐसा लगता था आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उनमें से एक हों।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बड़े सरदारों व बड़े लीडरों को उनके मुनासबि उपनाम (लक़ब) दति, जैसा कि हज़रत अबू बक्र को "सद्दिीक़", हज़रत उमर को "फारूक़", हज़रत उसमान को "ज़ुन्नूरैन", हज़रत अली को "कर्रार", हज़रत अबू उबैदह को "अमीन अल-उम्मह" और खालदि बनि वलीद को "सैफुल्लाह" का लक़ब दयिा।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर व्यक्ति की उसके मुनासबि ऐसी तारीफ करते जसिका वह योग्य होता। यही कारण है कि हर समाज और उम्र के महान लोग नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मोहब्बत करते थे। लहिाज़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही बनिा इख्तलिाफ सब लोगों के सरदार हैं और सबसे बड़े हैं।



लोगों को उनके स्थानों (दर्जों) में रखो।

हमारे लिए जरूरी है कि हम पूरे तौर से इस ह़दीस़ पाक का पालन करें। लहिाजा जनि्हें अल्लाह ने बुलंद कयिा है जैसे नेक काम करने वाले उ़लमा ए करिाम, औलयिा और अल्लाह के नेक बंदे, उन्हें हम भी अपनी नजरों में बड़ा जानें, उन्हें अपनी बैठकों में नज़दीक बठिाएं, उनसे बात करते समय और उनकी तरफ देखते समय उनका सम्मान करें, जहाँ तक और जतिना हो सके उनके साथ अच्छा व्यवहार करें, जतिना हो सके उतना उनके नजदीक हों, उनकी गैरमौजूदगी में उनका वचाब करें, जब भी हम उन्हें याद करें तो उनके लिए भलाई की दुआ़एं करें, जसिसे वह मलिते-जुलते हैं हम भी उससे मलिना-जुलना रखें और जसिसे वह मोहब्बत करते हैं अल्लाह से सवाब की उम्मीद पर हम भी उससे मोहब्बत करें। और अच्छे और बुरों के साथ व्यवहार करने में नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नक्शे कदम पर चलें। लहिाज़ा जो इनकसिारी (खाकसारी, वनिम्रता, वनियशीलता) के लायक उसके साथ खाकसारी से व्यवहार करें। है और जो खाकसारी के लायक न हो उसके साथ हरगज़ि खाकसारी न करें। ताकि यह हमारे अपमान व हमारी जल्लित का कारण न हो।



सदक़े (दान) को वापस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो अपनी उल्टी खा लेता है।

عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ: حَمَلْتُ عَلَى فَرَسٍ عَتِيقٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، فَأَضَاعَهُ صَاحِبُهُ، فَظَنَنْتُ أَنَّهُ بَائِعُهُ بِرُخْصٍ، فَسَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ذَلِكَ؟ فَقَالَ: "لَا تَبْتَعْهُ وَلَا تَعُدْ فِي صَدَقَتِكَ، فَإِنَّ الْعَائِدَ فِي صَدَقَتِهِ، كَالْكَلْبِ يَعُودُ فِي قَيْئِهِ

तर्जुमा: हज़रत उमर बनि खत्ताब रदियिल्लाहु अन्हु बयान करते हैं: मैंने अल्लाह के रास्ते में एक अच्छा घोड़ा दे दिया। लेकिन उस घोड़े वाले ने (घास और दाने की लापरवाही से) उसको बर्बाद कर दिया। मैंने सोचा कि घोड़े वाला उसको कम कीमत पर बेच देगा। तो मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस बारे में पूछा।



सदक़े (दान) को वापस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो अपनी उल्टी खा लेता है।

तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "उसको मत खरीदो और न ही अपने सदक़े (दान) को वापस लो। क्योंकि सदक़े को वापस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो अपनी उल्टी खा लेता है।"

उपहार या तोहफा अगर खुदा की तरफ से हो तो वह कृपा है और अगर बंदे की तरफ से हो तो वह सद़का और एहसान है। अगर खुदा की तोफीक़ व मदद न मिले तो इंसान सदक़ा या दान नहीं दे सकता। क्योंकि वह फतिरती तौर पर लालची होता है। लहिाज़ा उपहार वास्तव में अल्लाह की तरफ से होता है और बंदे की तरफ से तो अलंकृत तौर पर होता है।

और जो हमेशा यह अपने दमिाग में कि रखे अल्लाह मुझे देख रहा है तो वह यह बात अच्छी तरह से जान लेगा और कभी अपने आप को देने वाला नहीं समझेगा बल्कि हमेशा अपने आपको लेने वाला ही समझेगा। और जो अपने आप का जायजा ले वह कभी लालच नहीं करेगा बल्कि उसे अपनी फतिरत से उखाड़ फेंकेगा। और इसी सूरत में वह कामयाब भी होगा।



सदक़े (दान) को वापस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो अपनी उल्टी खा लेता है।

सखावत (उदारता) से इंसान को एक अलग ही प्रकार की खुशी मलिती है और उसे अलग ही सुकून और इत्मीनान महसूस होता है। यह वशिषता कुछ लोगों में तो फतिरती होती है और कुछ लोग इसे हासलि करते हैं। और - अल्लाह की कृपा से- हासलि करने वाले ही ज़्यादा हैं। तथा सखी आदमी फतिरती तौर पर प्यारा होता है। याद रहे कि इस धरती पर तमाम लोगों यहाँ तक कि अंबयिा ए करिम में भी सबसे बड़े दाता व सखी हमारे पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

उपहार (तोहफे) में अस्ल यही है कि वापस न लयिा जाए। हाँ अगर बेटे ने कसिी को कुछ उपहार दयिा और उसकी संपत्ति में बाप के अधकिार का सदेंह है। तो इमाम मालकि और उनके मुवाफकि उलमा ए करिम कुछ शर्तों के साथ उपहार की वापसी की इजाजत देते हैं। लेकनि हाँ कसिी भी हालत में सदक़े (दान) की वापसी की मनादी के बारे में उलमा ए करिम का कोई इख्तलिाफ नहीं है। क्योंकि वह (सदक़ा या दान) अब अल्लाह की खातरि सदक़ा करने वाले की मल्कियित से नकिल चुका है।



उस (चोर) से अ़ज़ाब को हल्का मत करो।

عَنْ عَطَاءٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - عَنْ عَائِشَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - قَالَتْ: سُرِقَ لَهَا شيء فَجَعَلَتْ تَدْعُو عَلَيه، فَقَالَ لَهَا رسول الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تُسَبِّخِي عَنْهُ

तर्जुमा: ह़ज़रत अ़ता रद़यिल्लाहु अ़न्हु ह़ज़रत आ़एशा से बयान करते हैं कि ह़ज़रत आ़एशा ने कहा कि उनकी कोई चीज़ चोरी हो गई। तो वह उसके चुराने वाले को बद्दुआ़ करने लगीं। तो उनसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "उस (चोर) से अ़ज़ाब को हल्का मत करो।"



उस (चोर) से अज़ाब को हल्का मत करो।

एक सच्चा मुसलमान लानत करने वाला और बुरी बात या गालीगलौज करने वाला नहीं होता है, न ही बुराई का बदला बुराई से देता है और न ही किसी दुनियावी मामले की वजह से गुस्सा करता है जब तक कि उसके धर्म या उसके सम्मान से उसका संबंध न हो या जान व माल और औलाद को सख्त नुकसान न पहुंचे। और जब गुस्सा करता भी है तो बहुत जल्द माफ कर देता है। और जब कोई जाहिल या बेवकूफ आदमी उससे भड़िता है तो उससे नरम बात करता है जिसमें अमन और सलामती झलकती होती है।

अगर मोमिन ठीक से यह पहचान ले कि अल्लाह सबसे ताकतवर व शक्तिशाली है और सबसे बदला लेने वाला है तो वह अपना मामला अपने अल्लाह पर छोड़ दे और ज़ालिम (अत्याचार करने वाला) को बद्दुआ न दे। क्योंकि यकीनन उसका ज़ुल्म (अत्याचार) उसे बर्बाद कर देगा भले ही कुछ समय के बाद करे।

लिहाज़ा यह अक्लमंदी नहीं है कि बंदा ज़ालिम के लिए किसी प्रकार के बदले को खुद चुने और यह कहे कि: "ए अल्लाह! तू उसके साथ ऐसा ऐसा कर।" क्योंकि इसमें अल्लाह के साथ एक तरह की बेअदबी है।

उस (चोर) से अज़ाब को हल्का मत करो।

हाँ अगर उसे अपना गुस्सा और तकलीफ कम ही करनी हो तो यूँ कहे: "मुझे अल्लाह ही काफी है और वही सबसे अच्छा मददगार है।" क्योंकि इससे उसका गुस्सा ठंडा हो जाएगा, उसकी तकलीफ कम हो जाएगी और जल्द ही अल्लाह उस पर अत्याचार करने वाले से उसका बदला लेगा।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस धरती के सबसे बड़े शिक्षक (उस्ताद) हैं जो अपनी शिक्षाओं द्वारा दिलों को पाक-साफ करते हैं, अखलाक को मजबूत बनाते हैं और पुरुषों और महिलाओं को ऐसे संवारते हैं कि जिसिके द्वारा एक मुसलमान अल्लाह की नजदीकी और उसकी मोहब्बत का एक महान स्थान हासिल कर लेता है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने:"उससे अज़ाब को हल्का न करो।" का मतलब है उससे अज़ाब और सजा को कम न करो जैसा कि हमने ऊपर बयान किया।

इस (और इस जैसी) हदीस शरीफ से ही नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा ए किराम रदियिल्लाहु अन्हुम ने अत्याचार और बुरे व्यवहार करने वाले को अच्छी तरह माफ करना सीखा।



बराबर बराबर हो जाओ और जुदा-जुदा न
हो ताकि तुम्हारे दिल जुदा न हों।

عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمْسَحُ مَنَاكِبَنَا فِي الصَّلَاةِ وَيَقُولُ: "اسْتَوُوا وَلَا تَخْتَلِفُوا، فَتَخْتَلِفَ قُلُوبُكُمْ، لِيَلِنِي مِنْكُمْ أُولُو الْأَحْلَامِ وَالنُّهَى، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ." قَالَ أَبُو مَسْعُودٍ: "فأَنْتُمُ اليومَ أَشَدُّ اخْتِلَافًا

तर्जुमा: हज़रत अबू मसऊ़द रद़यिल्लाहु अन्हु कहते हैं: अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ में (हमें बराबर बराबर खड़ा करने के लिए) हमारे कंधों को हाथ लगा कर इरशाद फरमाते:



बराबर बराबर हो जाओ और जुदा-जुदा न हो
ताकि तुम्हारे दिल जुदा न हों।

:"बराबर बराबर हो जाओ और जुदा-जुदा न हो ताकि तुम्हारे दलि जुदा न हों। तुम में से पक्की बुद्धि वाले अकलमंद मुझसे मलिकर खड़े हों, फरि उनके बाद वे जो (अकलमंदी में) उनके करीब हों फरि वे जो उनके क़रीब हो।" ह़ज़रत अबू मसऊ़द फरमाते हैं:" और आज तुम एक दूसरे से सबसे ज्यादा इख्तलिाफ रखते हो।"

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नमाज़ में सफों को बराबर बराबर रखने का बहुत ख्याल रखते थे। क्योंकि जमाअ़त के साथ नमाज़ दलिों की एकता और ईमानी भाईचारे का बेहतरीन सबूत है। लहिाज़ा जतिनी ज्यादा सफें बराबर होंगी जैसे कि ठोस इमारतें उतने ही ज्यादा दलि प्यार व मोहब्बत, दया और इमानदारी पर एक होंगे।

नमाज़ इस्लाम धर्म का सुतून (स्तंभ, पलिर) है। यह ईमान के सही होने और वशि्वास के पक्का होने का बेहतरीन सुबूत है। लहिाज़ा मुसलमानों का इसमें इकट्ठा होना सबसे बेहतर इकट्ठा होना है। क्योंकि यह उन फरशि्तों के इकट्ठा होने की तरह है जो आसमान में नमाज़ के लएि सफ बांधते हैं। लहिाज़ा नमाज़ के आखरि तक खड़े होने में जतिने ज्यादा कंधे से कंधा मलिाकर सीधे खड़े होंगे उतने ही ज्यादा हम उन फरशि्तों के नजदीक और उनकी तरह होंगे।



बराबर बराबर हो जाओ और जुदा-जुदा न हो
ताकि तुम्हारे दिल जुदा न हों।

लहिाज़ा नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फरमान: "बराबर बराबर हो जाओ और जुदा-जुदा न हो।" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कार्य पर ज़ोर देता है। क्योंकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह कहते जा रहे थे और साहाबा ए करिाम रद़यिल्लाहु अ़न्हुम के कंधों को छू रहे थे हालांकि कंधों को छूना ही सफों को बराबर-बराबर करने के आदेश के लिए काफी था लेकनि इसके बावजूद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी प्यारी जुबान से कहकर इस का आदेश दयिा ताकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का कार्य ओर जोरदार व मजबूत हो जाए।

सफ की बराबरी का मतलब है सीधे एक दूसरे से मलि कर खड़े हो जाना कि सभी के कदम (पैर) बराबर-बराबर हो जाएं और कंधे मलि जाएं।

नमाज में सफों की बराबरी का मकसद माफ करने और प्यार और मोहब्बत करने में दलिों का मलिना है। तथा नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

"सफें बराबर यानी सीधी रखो। क्योंकि सफें बराबर रखना नमाज़ के पूरा करने में शामलि है।"



बराबर बराबर हो जाओ और जुदा-जुदा न हो
ताकि तुम्हारे दिल जुदा न हों।

मतलब यह है कि जमाअ़त के साथ नमाज़ सही और मुकम्मल तौर पर उसके बगैर पूरी नहीं होती। और पूरे तौर पर जमाअ़त का सवाब केवल उसी को मलिता है जो नमाज़ के शुरू से लेकर आखरि तक सफ में सीधे व बराबर खड़े होने के ख्याल रखता है।



मुझे मेरे जानी-दोस्त (नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने तीन चीजों की वसियत की: हर महीने में तीन दिन रोज़े रखना, चाशत की दो रकात नमाज पढ़ना और सोने से पहले वित्र की नमाज़ पढ़ना।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: "أَوْصَانِي خَلِيلِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِثَلَاثٍ بِصِيَامِ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ، وَرَكْعَتَيْ الضُّحَى، وَأَنْ أُوتِرَ قَبْلَ أَنْ أَرْقُدَ

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू हुरैरा रद़यिल्लाहु अ़न्हु कहते हैं: "मुझे मेरे जानी-दोस्त (नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने तीन चीजों की वसयित की: हर महीने में तीन दनि रोज़े रखना, चाशत की दो रकात नमाज पढ़ना और सोने से पहले वत्रि की नमाज़ पढ़ना।"



मुझे मेरे जानी-दोस्त (नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने तीन चीजों की वसियत की: हर महीने में तीन दिन रोज़े रखना, चाशत की दो रकात नमाज पढ़ना और सोने से पहले वित्र की नमाज़ पढ़ना।

जाहरि है कि यह वसयित खासतौर पर हजरत अबू हुरैरा रद़यिल्लाहु अ़न्हु के लिए ही नहीं है बल्कि तमाम मोमनि पुरुषों और महलिाओं के लिए भी है जो ह़ज़रत अबू हुरैरा रद़यिल्लाहु अ़न्हु के द्वारा हम तक पहुंची है। यह उन वसयितों में से एक है जनिके द्वारा मुसलमान, हम्मित व हौसला, अल्लाह के लिए काम करने में अपने आप को मजबूत करना, और ना पसंदीदा काम करने पर नफ्स को सुधाना सीखाता है। ताकि उसे सुधारे, बेहतर व्यवहार करने पर उसकी आदत डाले और ख्वाहशिों, सुस्ती की तरफ जाने और काम के समय में लापरवाही बरतने से उसे फटकारे।

हर महीने में तीन रोज़े रखना एक ऐसी सुन्नत है जसिको नेक लोग हमेशा करते चले आए हैं और जसि बनिा कारण कभी नहीं छोड़ा है। लहिाज़ा शाअबान के महीने के अलावा सभी महीनों में कम से कम तीन रोज़े रखना मुस्ताहब है जबकि शाअबान के महीने में मुस्ताहब यह है कि उसमें दूसरे महीनों से अधकि रोज़े रखे। और याद रहे कि हर महीने में तीन रोज़े रखना उम्र भर रोजे रखने के बराबर है।

और यह भी जान लें कि सवाब इमानदारी और नेक नयिती के हसिाब से मलिता है। लहिाज़ा कभी छोटे से काम पर भी बहुत ज्यादा सवाब मलि जाता है और कभी बहुत बड़े काम पर भी कुछ सवाब नहीं मलिता या बहुत कम मलिता है।



मुझे मेरे जानी-दोस्त (नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने तीन चीजों की वसियत की: हर महीने में तीन दिन रोज़े रखना, चाशत की दो रकात नमाज पढ़ना और सोने से पहले वित्र की नमाज़ पढ़ना।

चाशत की दो रकात नमाज़ की बड़ी फज़ीलत आई है जैसा कि उनका बहुत ज़्यादा सवाब है। क्योंकि यह ऐसी नमाज़ है जिसे अक्सर लोग दुनियावी कामों में व्यस्त रहने की वजह भूले रहते हैं। लिहाज़ा यह सवाब के मामले में रात की नमाज़ (तहज्जुद की नमाज़) की तरह है। क्योंकि वह भी ऐसे ही समय में पढ़ी जाती है जबकि लोग सोए होते हैं। लिहाज़ा अक्सर दोनों ही में ईमानदारी व नेक नियिती होती है। और सवाब इमानदारी व नेक नियिती के हिसाब से ही मिलता है।

चाशत की नमाज़ का समय एक या दो भालों के बराबर सूरज बुलंद होने से शुरू होता है और ज़ोहर का समय शुरू होने से पहले यानी ज़वाल के समय खत्म होता है। चाशत की नमाज कम से कम दो रकात है और ज़्यादा से ज़्यादा बारह। लिहाज़ा जो चाहे दो ही पढ़ ले और जो चाहे पूरी बारह पड़े।

याद रखें कि चाशत की नमाज़ बार-बार तौबा करने, काम में सही और अच्छी नियित करने, उसमें इमानदारी पैदा करने और लापरवाही दूर करने और ख्वाहिश को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए बड़ी सहायक है।



मुझे मेरे जानी-दोस्त (नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने तीन चीजों की वसियत की: हर महीने में तीन दिन रोज़े रखना, चाशत की दो रकात नमाज पढ़ना और सोने से पहले वित्र की नमाज़ पढ़ना।

रही वत्रि की नमाज़ तो यह सुन्नते मोअक्कदिा (ऐसी सुन्नत जसि पर बहुत ज़ोर दयिा गया हो।) है। (हमारे यानी इमाम आ़ज़म अबू ह़नीफा के यहाँ यह वाजबि व ज़रूरी है।) लहिाज़ा मुसलमान को इसे छोड़ना नहीं चाहएि। इस पर बहुत ज़्यादा जोर दयिा गया है जसिकी वजह से यह वाजबि (अनविार्य) के करीब है। (बल्कि हमारे यहाँ वाजबि है।) लहिाज़ा हर मुसलमान की जम्मिेदारी है कि वह के सोने से पहले इसे जरूर पढ़े और कभी न छोड़े।

वास्तव में यह वसयित वत्रि की नमाज़ से संबंधति है सोने से पहले पढ़ी जाए या बाद में। और हर व्यक्ति अपने हसिाब को बेहतर जानता है लहिाज़ा उस पर अमल करे जसिमें उसकी बेहतरी हो।

वत्रि की नमाज़ का समय ईशा की नमाज़ से लेकर फज्र के उगने तक रहता है। अक्सर मुसलमान इसे ईशा की नमाज़ के बाद ही पढ़ लेते हैं।

जो शुरू रात में ही वत्रि पढ़ ले फरि वह अधकि नमाज़ पढ़ना चाहे तो जो चाहे नमाज़ पढ़े। और अक्सर उ़लमा के नजदीक यह है कि वह दोबारा वत्रि न पढ़े। क्योंकि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "एक ही रात में दो वत्रि की नमाज़ें नहीं।"